महावीर गैरीबाल्डी

लेखक

श्रीपरिपूर्णानन्द वर्म्मा

सम्पादक

रामजीलाल शर्म्मा

प्रकाशक

हिन्दी प्रेस, प्रयाग

प्रथम बार [मूल्य ।)

मुद्रक और प्रकाशक
रघुनन्दन शर्म्मा, हिन्दी प्रेस, प्रयाग

विषय-सूची

महावीर गैरीबाल्डी

प्रारम्भिक बातें

जिस समय जेनोआ नगर में इटली की भावी आशा के प्यारे फूल मेज़िनी, दो वर्ष की अवस्था के थे, उसी समय, सन् १८०७ में, इटली की सीमा पर, भूमध्य सागर से मिले हुए आलपस पर्वत के एक भाग के उतार पर, प्रकृति की सुन्दरता, पहाड़ की माला, झरनों की ओढ़नी तथा समुद्र

की गोद में नाइस नामक एक सुन्दर ग्राम बसा हुआ था—उसी नाइस नगर में साधारण हैसियत के एक मल्लाह व्यापारी के घर एक पुत्र रत्न उत्पन्न हुआ।

आज के सौ-सवासौ वर्ष पहले नाइस एक सुन्दर ग्राम था। वहाँ के रहने वाले मछुए या मल्लाह लोग समुद्र द्वारा ही अपनी जीविका चलाते थे। अच्छी हैसियत के मल्लाह जहाज़ रख कर समुद्र द्वारा व्यापार करते थे। किन्तु किसी भी स्थिति में क्यों न हों, इनकी जाविका समुद्र द्वारा ही होती थी, इसी कारण यहाँ के रहने वाले मनुष्य समुद्री कीड़े कहे जाते थे।

जिस मल्लाह-परिवार का हमने ऊपर ज़िक्र किया है, वह हैसियत में विशेष अमीर नहीं था। पर जहाज़ रखता था और व्यापार करता था। इस परिवार में, दादा ने सम्पूर्ण सम्पत्ति को नष्ट कर डाला था। पर पिता के थोड़े-बहुत कमाये धन से घर का काम-काज चलता था। उसी धन से इस परिवार के स्वामी ने, एक जहाज़, ख़रीद कर व्यापार करना शुरू किया था। वह बड़ा परिश्रमी, दयालु और परोपकारी था। उसकी गृहणी कर्त्तव्यपरायणा तथा सुशोला थी। उस पुरुष का नाम डोमेनिको गैरीबालडी और पत्नी का नाम रोज़ा था।

गैरीबालडी नाम बड़ी पवित्र वंश-उपाधि थी। दो हज़ार वर्ष पहले, रोम के प्रजातन्त्र के समय में भी इस नाम के बड़ी ऊँची श्रेणी के लोग मिलते थे। किन्तु उस समय, केवल यह

परिवार ही इस प्रतिष्ठा को भोग रहा था। सच पूछिए तो, उस परिवार के पास, इस नाम के अलावा और कोई विभूति नहीं थी।

२२ जूलाई १८०७ को उस ग़रीब मल्लाह के एक पुत्र उत्पन्न हुआ। उसका नाम ग्वीसेप या जोज़ेफ़ रक्खा गया। जोसेफ़ का लालन-पालन बड़ी देखरेख के साथ हुआ।

पिता-माता दोनों इस बालक को बहुत प्यार करते थे। स्वयं अपना समुद्री व्यापार होने के कारण उनको इस बालक के पढ़ाने-लिखाने की ख़ास फ़िक्र तो थी नहीं। उनका विचार तो यह था कि, यह बालक किस प्रकार महाबली हो। मार-पीट तो यह जानता ही न था; परन्तु बिना मारे-पीटे भी यह बालक बड़ा गुणवान्, शीलवान् तथा दयालु प्रकृति का निकला।

बालक गैरीबाल्डी प्रकृति के बड़े पुजारी थे। पहाड़ की चोटी पर बैठ कर चारों ओर का सुन्दर दृश्य देखने में इन्हें बड़ा आनन्द मिलता था।

बहादुरी की सीख

इनके चारों ओर मेहनत-मज़दूरी द्वारा जीविका चलानेवाले लोग ही रहते थे। इस कारण ये कायर क्योंकर होते? फिर भी, इनके हृदय में बहादुरी के विचार भरे रहते थे और समय-समय पर यह साफ़ ज़ाहिर हो जाता था कि यह एक सूरमा

सिपाही होगा। बचपन में इनका ज़्यादातर समय वीरता के खेल खेलने में बीतता था। घोड़े पर बैठने का, तलवार, भाला चलाने का, दौड़ने का तथा कुश्ती लड़ने का इन्हें बड़ा अच्छा अभ्यास था।

विद्या से इन्हें विशेष अनुराग न था। इनके माता-पिता ज़्यादा पढ़ाने के महत्त्व को समझते भी न थे। उस समय की ज़ुल्मी सरकारें यह सोचती थीं कि पढ़ने-लिखने से लोगों में ज्ञान उत्पन्न होता है और ज्ञान उत्पन्न हो जाने पर लोग राजनीतिक अधिकार माँगते हैं, इस कारण प्रजा का ध्यान शिक्षा की ओर से खींच लिया गया था। दूसरे गैरीबाल्डी, यद्यपि पाठशाला में जाते भी थे तो इन्हें इतिहास के अलावा और किसी विषय में विशेष आनन्द न आता था। इतिहास के ये एक पक्के विद्यार्थी थे और पुस्तकें पढ़ने का शौक़ीन होने के कारण इतिहास की जो पुस्तकें इनके हाथ पड़तीं ये उनको पढ़ डालते थे।

स्वदेश के इतिहास तथा उसकी ऐतिहासिक घटनाओं की भूमि देखने का गैरीबाल्डी को बड़ा शौक़ था। जिस समय ये अपने देश के किसी युद्ध-स्थल को देखते इनकी छाती गर्व से फूल उठती, पर पुराने महत्त्वपूर्ण नगरों की दुर्दशा देख कर इनको दुःख भी होता था—किन्तु, इससे यह न समझना चाहिए कि इनमें देश-भक्ति की किसी प्रकार की भावना आगई

थी। इस प्रकार के कोई लक्षण अभी तक इस वीरता के पुजारी बालक में न थे।

जोसेफ़ गैरीबाल्डी अपने को 'जलमानुस' कहते थे। वास्तव में ये थे भी ऐसे ही। इनके पिता ने इनको समुद्र-यात्रा पर भेजने के लिए पहले से ही तैयारी कर रक्खी थी। तैरना तो ये गज़ब का जानते थे। समुद्र-यात्रा का इन्हें इतना शौक़ था कि एक बार पढ़ने से जी चुरा कर, बचपन में ही, थोड़ा सामान चुराकर, दो साथियों के साथ, पिता की एक डोंगी खोलकर समुद्र में दूर तक चले गये। यदि इनके पिता ने ख़बर पाते ही डोंगी न पकड़वा मँगवाई होती तो न जाने ये कहाँ निकल भागते।

ये तैरना इतना अच्छा जानते थे कि आठ वर्ष की उम्र में ही इन्होंने एक बुढ़िया को डूबते हुए बचाया था। बारह वर्ष की अवस्था में, इनके सामने तूफ़ान से एक डोंगी उलट गई। ये झट पानी में कूद पड़े और कई एक प्राणियों की जान एक साथ बचा ली। १३ वर्ष की अवस्था में मेज़िनी ने स्कूल की ऊँची से ऊँची परीक्षा पास कर ली थी पर गैरीबाल्डी इस उमर में पढ़ना-लिखना कुछ भी नहीं जानते थे। हाँ, समुद्र में मछली की तरह निर्भय होकर विचरना ख़ूब जानते थे।

जोसेफ़ को समुद्र-यात्रा का बड़ा शौक़ था; किन्तु, इनकी अवस्था का विचार कर पिता इन्हें अकेले कहीं नहीं जाने देते

थे। २२ वर्ष की अवस्था में इन्होंने एक जहाज़ पर सहायक कप्तान की जगह की नौकरी पाई। इस नौकरी के समय में इनको अनेक मुसीबतों का सामना करना पड़ा तथा जान जाते बची। एक बार जहाज़ टकरा कर डूबने से बचा, एक बार तूफ़ान में साथ का जहाज़ डूब गया, पर बड़ी अक़्लमन्दी से इन्होंने अपना जहाज़ बचा लिया। उन दिनों, इन्हें यूनान और काला सागर की यात्रायें करनी पड़ीं। समुद्री डाकू उस ज़माने में बहुत होते थे। तीन बार गैरीबाल्डी को उनका मुक़ाबला करना पड़ा।

इस प्रकार ठोकरें खाता हुआ, संसार की कठिनतम यंत्रणाओं को भोगता हुआ, अपनी विपत्तियों को बड़े आनन्द से झेलता हुआ यह वीर जीवन के २५-२६ वर्ष बिता ले गया। समुद्र के कष्टों को छोड़कर जोसेफ़ को और कोई कष्ट नहीं झेलना पड़ा। वरन्, इनका जीवन बड़ा मौज-बहार में बीता। वयस्क हो जाने पर भी यह शेर अभी तक यह नहीं जान पाया था कि संसार में ईश्वर ने उसे क्या काम करने के लिए भेजा है।

इटालियन अशान्ति के रूप

अब जोसेफ़ गैरीबाल्डी के जीवन के सिलसिले को छोड़ कर हम पाठकों को ज़रा इटालियन अशान्ति की कहानी

बतला दें। इटली संसार के उन देशों में से है जो ज़ालिमों के ज़ुल्म में पिसकर तबाह हो गये हैं तथा विदेशों ने जिनका ख़ून चूस लिया है। नेपोलियन बोनापार्ट ने इटली को जीतकर उसे अपने सरदारों में बाँट दिया था तथा उनके शासन को गणतन्त्र या प्रजातन्त्र शासन कहकर पाखण्ड फ़ैलाया था। किन्तु वाटरलू की लड़ाई में, जब यूरोप की सभी शक्तियों ने मिलकर नैपोलियन बोनापार्ट को परास्त कर दिया; तब इन न्याय की ठीकेदार शक्तियों ने गिद्धों की तरह, फ़रांसीसी राज्य की लाश के बँटवारे के लिए बीना नगर में एक सम्मेलन कराया। सन् १८१५ में, इस सम्मेलन ने इटली का बहुत ज़्यादा हिस्सा आस्ट्रिया को दे दिया। उस समय, जिसे इटली कहते थे, वह केवल एक लाख वर्गमील में थी। उसकी आबादी दो करोड़ से भी कम थी। फिर भी, यह छोटा सा भाग दस प्रान्तों में—दस राजाओं में बँटा हुआ था। ये राजा आस्ट्रिया के दबाव में थे, और जो दो-एक थे, वे विरुद्ध जाने का साहस नहीं कर सकते थे।

इन राजाओं ने अपने राज्य में ज़ुल्म की पराकाष्ठा कर रक्खी थी। जहाँ विदेशी शासन था, वहाँ अत्याचार का तो कहना ही क्या। बिरले ही मनुष्य ऐसे होते हैं जो ग़ैर को चाहते और सुख देते हैं। विदेशी अमलदारी में रहने पर कौन राज्य सत्यानाश की सीमा तक नहीं पहुँच गया है? आज तक कौन ऐसा राज्य है जो विदेशी सरकार की हुकूमत

से तबाह न हो गया हो? झूठ, पाप और अनाचार सब को उत्तेजना मिलती थी—पोप का पाखण्ड तथा धर्म की ज़्यादती लोगों को मारे डालती थी, ज़बान खोलने पर ज़बान निकाल ली जाती थी, जिसने ज़रा भी पढ़ने-लिखने की तरफ़ ज़्यादा रुचि बढ़ाई, सरकार उसे बलवाइयों में शुमार करने लगती थी।

कोई भी देश हो, कितना भी मुर्दा क्यों न हो, उसमें जान ज़रूर आयेगी। अविनाशी आत्मा अपना ईश्वरत्व पहचान कर पापियों को पाप का दण्ड देने के लिए उठ खड़ी होगी। इसी प्रकार, अभागों की आह कुछ तो रङ्ग लायेगी। लिखा है—

"मुये खाल की श्वास सों, लोह भस्म हो जाय।"

तो फिर यह तो सोया हुआ ज़िन्दा आदमी था।

इटली को विदेशी जाल तथा स्वदेशी राजाओं के अत्याचारों से बचाने के लिए सन् १८१५ में ही, वीना सम्मेलन के निर्णय के बाद, देशभक्त इटालियनों ने कारबोनारी नामक गुप्त षड्यन्त्र मण्डली में और भी अधिक भाग लेना शुरू कर दिया। यह मण्डली उसी समय स्थापित हुई थी, जिस समय नेपोलियन ने इटली को जीतकर अपने सर्दारों में बाँट दिया था। उस समय मालघेला नामक देशभक्त ने इसकी स्थापना की थी। १८१५ में पकड़ कर वह वीर सार्डीनिया की सरकार के सुपुर्द कर दिया गया था और उसने इसे कठोर कारावास में डाल दिया था।

पर कारबोनारी संस्था फलती-फूलती गई। जब इटली के हरेक भाग में इस संस्था की शाखायें फैलती गईं, तब इसको नष्ट करने के लिए पुलीस के एक बड़े दिमाग़वाले अफ़सर ने—प्रिंस आफ़ केनोज़ाने बदमाश, गुण्डों, की एक संस्था खोली तथा सरकार द्वारा इस संस्था को धन, हथियार आदि की पूरी सहायता दी। उन्होंने चुन-चुन कर कारबोनारी के सदस्यों, स्वतंत्र विचार वालों को जङ्गली ज़ुल्म से परेशान किया। पर इससे कुछ फल न निकला। कारबोनारी की शक्ति बढ़ती ही गई।

पहली क्रान्ति तथा शक्ति की परीक्षा नेपुल्स में हुई जहाँ स्पेनका पिट्ठू राजा फ़र्डिनैण्ड राज्य करता था। फ़र्डिनैण्ड को गिर्जाघर में जाकर शपथ लेनी पड़ी कि मैं प्रजा के प्रतिनिधियों की एक पार्लमेण्ट खोलूँगा। इस विजय का प्रभाव सारी इटली में फैल गया, उसी समय से कारबोनारी दल शक्तिशाली हो गया तथा देश में कई छोटे-मोटे बलवे हुए।

नेपुल्स के बलवे के बाद ही सारडीनिया में—पीडमॉट में क्रान्ति हुई। यहाँ पर विक्टर इम्यानुयेल राज्य करते थे। उनसे सुधारवादी दल ने प्रजा को भी शासन में अधिकार देने के लिए आग्रह किया। यद्यपि, उस समय इटली के सभी राज्यों में उन्नतिशील तथा सुशासनयुक्त राज्य पीडमॉट का था, पर जनता सदैव सुराज नहीं चाहती है, 'स्वराज्य' चाहती है। पर

विक्टर इम्यानुयेल अधिकार देना नहीं चाहते थे। अन्त में, प्रजा की ज़बर्दस्ती देखकर वे राज्य छोड़कर भाग गये और उनके वारिस चार्ल्स फेलिक्स के उपस्थित न रहने के कारण चार्ल्स अलबर्ट गद्दी पर बैठे। यह व्यक्ति स्वयं १८२१ में कारबोनारी था—अतएव इसके गद्दी पर बैठने से लोगों को बहुत कुछ आशा हुई।

किन्तु चार्ल्स अलबर्ट की चालबाज़ियों का क़िस्सा और इटालियन क्रान्ति की उस समय की कहानी का संक्षिप्त विवरण हम मेज़िनी की जीवनी में लिख चुके हैं। उसको फिर से दुहराने की कोई ज़रूरत नहीं है अतएव अब हम पुनः गैरीबाल्डी की जीवनी की तरफ़ लौटेंगे।

कोई भी आदमी हो, यदि उसमें ज़रा देश-प्रेम हो, ज़रा भी ईश्वरीय ज्ञान हो, तो वह एक न एक समय स्वदेश-सेवा के लिए सन्नद्ध हो जायगा। यही हाल गैरीबाल्डी का था। समुद्र-यात्रा करने के पहले ही, देश की दुरवस्था का जो हाल ये देखते थे, उससे इनको यह मालूम होता जाता था, उससे इनको विश्वास होता जाता था कि, देश की अवस्था ठीक नहीं है और विदेशी पद देश में रहने के कारण वह नष्ट हो रहा है। गैरीबाल्डी अपनी आत्म-कथा में लिखते हैं कि मुझे यह बात धीरे-धीरे मालूम होने लगी थी। समुद्र में, समुद्री डाकुओं का भय था, खुश्की पर भी जानो-माल की हिफ़ाज़त का कोई प्रबन्ध न था।

इसी बीच में, समुद्र-यात्रा में इनकी एक जेनेवा निवासी देश-प्रेमी से यकायक भेंट हो गई। उससे बात करते समय गैरीबाल्डी ने अपने मन के उद्गार प्रकट किये। यह सुनते ही कि यह युवक देश की ओर झुक रहा है उसने इन्हें देश-प्रेम की बड़ी सुन्दर शिक्षा दी। साथ ही इन्हें कारबोनारी संस्था का हाल भी बतलाया। जब गैरीबाल्डी को यह मालूम हो गया कि, देशभक्ति का कार्य करने के लिए एक गुप्त संस्था है तो इनका जवानी का ख़ून उबल उठा और ये बहुत प्रसन्न हुए—किन्तु अभी तक इनके विचार पक्के नहीं हुए थे।

गैरीबाल्डी की स्वदेश-भक्ति ज्यों-ज्यों बढ़ने लगी त्यों-त्यों इन्हें यह मालूम होने लगा कि, जिस प्रकार पेड़ की जड़ में कीड़ा लग जाने से वह नष्ट होने लगती है, उसी प्रकार आस्ट्रिया हमारे देश का कीड़ा है—पर इनमें ज्यों-ज्यों देश भक्ति आती, त्यों-त्यों क्रोध बढ़ता और जवानी का ख़ून सबको मारने-काटने के लिए उबलने लगता। पर इनकी देश-भक्ति की शिक्षा उस समय पूरी हुई जब ये कुछ ही दिनों बाद कुस्तुन्तुनिया (तुर्किस्तान की राजधानी) जा रहे थे। राह में, जहाज़ पर, बेराल्ट नामक एक अति दृढ़ और पवित्र देश-भक्त से इनकी भेंट हो गई। दोनों की लगन एक थी ही, इस कारण, इन दोनों में मित्रता हो गई।

किन्तु इस मित्र से बात करने का दूसरा ही फल निकला। यकायक इस योद्धा के हृदय में यह प्रकाश उदित हो गया कि

अत्याचार चाहे स्वदेश में हो चाहे परदेश में, सब जगह उसका प्रतीकार करना चाहिए और प्रत्येक नवयुवक का कर्तव्य है कि देश के अत्याचार से, साथ ही जहाँ भी कहीं अनाचार हो, उसके विरुद्ध जाकर लड़ना चाहिए। मेज़िनी के हृदय में जो विश्वप्रेम उदित हुआ था, वही प्रेम गैरीबालडी के हृदय में भी उत्पन्न हो गया; किन्तु, इसके हृदय में यह प्रेम बड़ा उग्र हो गया।

मेज़िनी इस समय अपने लेखों के जादू से सारी इटली को जोश से भर रहे थे। गैरीबालडी ने उनके लेखों को पढ़ना शुरू किया और मेज़िनी का चेला हो गया—यह कथन सत्य है कि गैरीबालडी को मेज़िनी के लेखों ने देश-प्रेम का सच्चा मार्ग सुझाया तथा कर्त्तव्य-पथ पर दृढ़ बनाया।

मेज़िनी के अध्ययन करने के पूर्व जब मेज़िनी का यश गैरीबालडी ने सुना तब इनके हृदय में उनका दर्शन करने के लिए, इतनी भक्ति जग उठी कि, उस समय, मार्सेले में उनका पता पाकर ये उनसे मिलने गये और जब उनके दर्शन कर लिये, तब इनको चैन पड़ी। इस भेंट से ही दोनों में प्रगाढ़ मित्रता हो गई। दोनों एक ही पथ के पथिक तो थे ही फिर भला मित्रता क्यों न हो जाती।

पहला वार

१८३६ में मेज़िनी ने सीमा पार कर इटली में सशस्त्र हमला करने का जो प्रयत्न किया था, तथा जिसमें वे असफल रहे थे

उसका वर्णन हम उनकी जीवनी में कर चुके हैं। अब यहाँ उसका हाल बतलाने की कोई ज़रूरत नहीं है। किन्तु, इतनी बात और बतला दूँ कि सीमा पर, सेना के तित्तर-बित्तर होने के पहले, यकायक किसी के हाथ से बन्दूक़ छूट गई और गोली निकल गई। धड़ाके की आवाज़ सुनते ही मेज़िनी बेहोश हो गये थे—और इसके बाद ही सेना तित्तर-बित्तर हो गई थी। इसी बलवे के सम्बन्ध में गैरीबाल्डी को भी एक काम सौंपा गया था, जिसे इन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया था।

इनकी नियुक्ति पूरी डाइस नामक जहाज़ पर हुई थी। इन्होंने उस जहाज़ के आदमियों को क्रान्तिकारी दल में मिलाने में बहुत कुछ सफलता प्राप्त की थी। किन्तु बलवे का समाचार फूट चुका था और लोग गिरफ़्तार कर लिये गये थे। जो बन्दी होने के अपराधी थे भी नहीं, वे भी बन्दी होने लगे। पर, गैरीबाल्डी को जब मालूम हुआ कि जेनोआ में बलवा होने वाला है, तब ये फ़ौरन वहाँ पहुँच गये; पर, इनको क्या मालूम था कि, यह बलवा किस कारण, कब फूट गया। वहाँ आस-पास सेना घिर रही थी, यह बेचारा लौट भी नहीं सकता था। पर किसी प्रकार किसान का वस्त्र धारण कर ये भाग निकले और अपनी मातृभूमि पहुँच गये।

नाइस पहुँच कर, अपनी माता से बिदा होकर नाइस की बाढ़ की नदी पार कर, उस पार फ्राँसीसी छावनी में जा पहुँचे,

वहाँ जब इन्होंने अपना हाल बतला दिया तब ये फ़ौरन बन्दी कर लिये गये। पर जिस कमरे में क़ैद किये गये थे, उसमें १५ फ़ुट ऊँची खिड़की पर से चढ़कर ये कूद पड़े और पहरेदारों के देखते ही देखते जंगलकी राह भाग गये।

यहाँ से गैरीबाल्डी ने मार्सेले की राह पकड़ी। मार्ग में एक होटल में ठहर गये। वहाँ पर रात्रि ख़ूब आनन्द से बीती। पर जब होटल वाले को मालूम हो गया कि ये कौन हैं, उसने इनसे साफ़ कह दिया कि, 'मैं तुमको बन्दी करता हूँ'। पर गैरीबाल्डी ज़रा भी न घबराये। आप ने हँस कर कहा—अरे यार पकड़ लेना, पर अभी तो आनन्द कर लेने दो। रात भर शराब-कबाब में इतना समय दिया कि होटल का मैनेजर अपना काम ही भूल गया और सबेरे आप मित्रों-रात में ही कई मित्र हो गये थे—से बिदा होकर मार्सेले की ओर चलते बने। गैरीबाल्डी निर्विघ्न मार्सेले पहुँच गये।

प्राणदण्ड

मार्सेले पहुँचने पर इनको इटली का एक समाचारपत्र मिला। उसमें इन्होंने जो समाचार देखा, उसने इनको अचम्भे में तो डाल ही रक्खा, साथ ही, इनका जीवन भी दूसरे साँचे में ढाल दिया। सार्डीनिया की सरकार ने, उन लोगों को, जिन्होंने क्रान्ति में भाग लिया था, या नहीं भी लिया था,

पर, भाग लेने वाले थे, फाँसी की सज़ा सुना दी। इस प्रकार प्राणदण्ड प्राप्त पुरुषों की जो नामावली छपी थी, उसमें गैरीबाल्डी का भी नाम था।

अब गैरीबाल्डी ने समझ लिया कि जीवन एक सरल नहीं किन्तु विकट पहेली होगई। इन्होंने अपना नाम ही बदल दिया। अब इन्होंने अपना नाम एम् पेन रख लिया और इसी नाम से यूनियन नामक जहाज़ पर नौकरी कर ली।

इसी समय मार्सेल में भयंकर प्लेग फैला। पहले यूरोप में प्लेग बहुत फैला करता था तथा भारत से भी अधिक दुर्दशा करके छोड़ता था। भारत में प्लेग यूरोप का वरदान है। वहीं से यूरोपीय यात्री इस रोग को यहाँ लाये। अपने यहाँ तो घोर सफ़ाई और प्रबन्ध करके इन्होंने प्लेग के रोग से छुटकारा पा लिया पर दरिद्रता में कराहता हुआ अभागा भारत उसमें पिस रहा है।

इस महामारी से जो दुर्दशा होती है, वह सब दुर्दशा हो गई। सगा भाई भी ऐसे रोग में साथ नहीं देता। वैद्य, डाक्टर लाशों को ठुकराते चलते थे। लाशों को पूछने वाला कोई भी न था। चारों ओर हाहाकार छा गया। इस अवसर पर जो महा सेवा-कार्य गैरीबाल्डी ने किया था, वह स्वर्णाक्षरों में लिखे जाने के योग्य है। गैरीबाल्डी ने यहाँ पर यह साबित कर दिया कि जनता की—मनुष्य जाति की—सेवा में अपना प्राण

निछावर कर देना कोई वस्तु नहीं है। पाठकों, यह कितनी बड़ी शिक्षा हमको इनके जीवन से मिलती है।

दक्षिण अमरीका को

यह हम पहले ही लिख चुके हैं कि गैरीबाल्डी की सबसे बड़ी कामना यह थी कि, मैं सम्पूर्ण मानव जाति की सेवा करूँ। मार्सैल का शान्तिमय जीवन इनको जीवन-शून्य दीखता था। इनको जीवन का कोई विशेष उद्देश्य न होने से केवल खाना, पीना, और सो रहना बुरा लगता था। इनकी आत्मा यह सोचती थी कि, कौन भू-भाग ऐसा है जहाँ सब से अधिक अशान्ति है तथा काम करनेवाले वीरों की ज़रूरत है। अन्त में इन्होंने दक्षिण अमरीका जानेवाले एक जहाज़ की नौकरी करली।

उस समय यदि देश-सेवा का कोई भी स्थान या साधन दीखता तो ये कभी भी दक्षिण अमरीका न जाते; पर, अब विवश होकर जाना ही पड़ा।

गैरीबाल्डी का दक्षिण अमरीका का जीवन इतना उज्ज्वल है, इनका वहाँ का चरित्र इतना ऊँचा है कि, उससे साफ़ पता चल जाता है कि इस आदमी का धर्म ही प्रजा पक्ष से लड़ना था। यदि ये केवल नौकरी के लिए ही वहाँ गये होते तो कहीं भी नौकरी करके आराम से जीवन व्यतीत कर सकते थे। पर केवल

नौकरी तो इनका आदर्श था ही नहीं। दक्षिण अमरीका पहुँच कर इन्होंने रियोडी ग्रान्दे दू सूल नामक प्रान्त की नौकरी कर ली। दक्षिण अमरीका कई प्रान्तों में बँटा हुआ था। उन प्रान्तों का बँटवारा केवल जिसकी लाठी उसकी भैंस पर अवलम्बित था। उन प्रान्तों या राज्यों में बराबर लड़ाई होती रहती थी।

रियो ग्रान्दे ब्रैजिल राज्य के अन्तर्गत था। उस समय वह इस राज्य के विरुद्ध विद्रोह कर रहा था। ३ जून, १८३४ को इनको प्राणदण्ड की आज्ञा मिली थी—और इसी समय से गैरीबाल्डी का वास्तविक जीवन प्रारम्भ होता है। १८३६ में ये रियो ग्रान्दे प्रान्त की सीमा में पहुँचे थे—इसी समय यह प्रान्त विद्रोह कर रहा था।

गैरीबाल्डी तो चाहते ही थे कि कहीं लोक-सेवा का अवसर मिले। उस प्रान्त ने फ़ौरन ही इनको नौकरी दे दी। इनको एक जहाज़ दिया गया। उसका नाम अपने मित्र के संस्मरण में इन्होंने मेज़िनी रक्खा। इन्हें १६ साथी भी मिले थे। इन्हीं १६ साथियों को लेकर, ये ब्रेजिल जैसी बड़ी शक्ति से संग्राम के लिए निकल पड़े।

सौभाग्य से राह में इनको एक आष्ट्रियन जहाज़ मिल गया। इस जहाज़ को लूट कर गैरीबाल्डी को इस बात का सन्तोष हुआ कि, हमने आस्ट्रिया का कुछ तो नुक़सान किया। इस जहाज़ पर इनको कुछ हीरे भी मिले।

आस्ट्रियन जहाज़ को साथ लेकर ये पुनः समुद्र में चल निकले।

ब्रेज़िल सरकार के विरुद्ध कई स्थानों पर गैरीबाल्डी ने विजय प्राप्त की। किन्तु, अभी इनको अपनी पूर्ण तैयारी के लिए ईश्वर द्वारा कुछ कष्ट भोगना था—वह अवसर भी उपस्थित होगया। अपने दोनों जहाज़ लेकर ये मांटवीडो न मक एक ग्राम में पहुँचे, यहीं पर अपने हारे एक महाजन के हाथ बेच दिये। जब महाजन दाम देने में आनाकानी करने लगा, तब पिस्तौल का भय दिखला कर उससे दाम वसूल किये और पुनः समुद्र में चल निकले।

क़ैद तथा यातना

इस समुद्र-यात्रा में इनको कितना कष्ट भोगना पड़ा, कितनी मुसीबतें उठानी पड़ीं, इस बात की लम्बी कहानी लिखने के लिए यहाँ पर स्थान नहीं है।

इस यात्रा में, एक स्थान पर यकायक दो जहाज़ों ने इनको घेर लिया। दोनों ओर से खूब अग्नि-वर्षा होने लगी। पतवार वाला यकायक गोली लगने से मर गया। गैरीबाल्डी ने अपने जीवन की परवाह न कर, स्वयं यह काम करना शुरू किया। दुर्भाग्य से, इनके कन्धे में भी एक गोली आकर लगी और ये अर्द्धमृत होकर गिर पड़े।

वीर का साथी भी वीर होता है। गैरीबाल्डी के साथी वीरता के साथ लड़ते रहे। उन्होंने अपने स्वामी की भी रक्षा की, शत्रु को भी खदेड़ा और लापलाटा नदी में से अपना जहाज़ कुशलपूर्वक निकाल लाये। गैरीबाल्डी को १६ दिन तक भयंकर ज्वर चढ़ा रहा। इनके बचने की भी आशा न थी। उसी अवस्था में ग्युलाग्वे के नगर में इनका जहाज़ पहुँचा और यहाँ उचित रीति से इनकी चिकित्सा होनी शुरू हुई।

६ मास की चिकित्सा का परिणाम यह हुआ कि, ये चंगे होगये, स्वास्थ्य भी ठीक हो गया। जब इनको यह मालूम हुआ कि ये उस नगर में नज़र-क़ैद हैं तथा इन्हें नगर छोड़ कर जाने को आज्ञा नहीं है तब इनकी स्वाधीन आत्मा विद्रोह कर बैठी और आप एक दिन, एक राह दिखलाने वाले को साथ लेकर रात में ही घोड़े पर चल निकले और लगातार ५४ मील तक चलते ही रहे।

जब चलते-चलते थक गये, तब एक जंगल में आराम करने के लिए रुक गये। मार्ग-दर्शक भी किसी काम से बाहर चला गया। थोड़ी देर विश्राम करने के बाद जब इन्होंने मार्ग-दर्शक को न पाया तब उसकी तलाश में पैदल ही ज़रा आगे बढ़ गये। इतने में ही, हाथ में नङ्गी तलवारें लिए एक दल आ पहुँचा। उसने इनको पकड़ लिया और ग्युलाग्वे के गवर्नर के पास ले गया। गवर्नर साहब जेल के दरवाज़े पर खड़े थे।

यहाँ पर गैरीबालडी को कितनी यातना दी गई, उसका हाल पढ़ कर पाठक काँप उठेंगे। पहले तो इनको कोड़े से पीट कर बेदम किया गया, फिर हाथों में डोरी बाँधकर लटका दिया गया। दो घण्टे तक, यह वीर भूख-प्यास से व्याकुल इसी प्रकार लटका रहा; पर, भागने में सहायता देने वाले मार्गदर्शक का नाम इन्होंने न बतलाया। आत्म-बल, पवित्रता, त्याग तथा उदारता इसे कहते हैं।

प्यास के कारण इनका गला सूख रहा था; पर, यातना को बढ़ाने के लिए एक सिपाही पानी लिए खड़ा था और मुँह में एक-एक बून्द पानी टपका रहा था। दो घण्टे के बाद हथकड़ी-बेड़ी डालकर इन्हें जेल में ठूँस दिया, वहाँ ये दो मास तक रक्खे गये—किन्तु और अधिक यातना न दी गई। दो मास बाद ये छोड़ दिये गये। किन्तु पीड़ा, चोट, और कष्ट ने इनके शरीर को बेकाम कर दिया था—किन्तु उसी कमज़ोरी की हालत में यह वीर मांटवीडो नगर में—शत्रु राज्य में गुप्त रीति से रहा।

मेज़िनी ने यह यातना इटली के लिए नहीं, किन्तु दक्षिण अमरीका के एक राज्य के लिए सही थी। मानव-प्रेम का इससे बड़ा आदर्श और उदाहरण क्या होगा। फिर भी, ये अपने कर्त्तव्यपथ से न हटे। ये पुनः ब्रेज़िल राज्य के विरुद्ध जाने वाली एक सेना में भर्ती हो गये और युद्ध-क्षेत्र पर चले गये।

उस समय गैरीबाल्डी को रह-रह कर इस बात का ख़याल ज़रूर होता था कि मैं स्वदेश को बुरे अवसर पर छोड़ आया हूँ, तथा उसकी सेवा नहीं कर रहा हूँ। इन्होंने अपने एक मित्र को इस आशय का भी लिखा था।

पुनः सेना में भर्ती होने पर गैरीबाल्डी को केवल दो जहाज़ मिले। उन जहाज़ों से इन्होंने ब्रेज़िल की विशाल जल-सेना के छक्के छुड़ा दिये। तारीफ़ तो यह थी कि, कभी ये इस ख़लासी सेना को घुड़सवार बनाकर, स्थल पर शत्रु का क़िला छीन लेते और कभी फिर जल में घुस जाते। इनके इस अद्भुत पराक्रम के कारण ब्रेज़िल राज्य को बड़ी हानि उठानी पड़ी। इस युद्ध में इनकी सबसे बड़ी विजय अलेगरो का बन्दरगाह जीतना था।

विजय-गौरव

गैरीबाल्डी का यश दक्षिण-अमरीका में भली भाँति ख्याति पा चुका था। इनकी विजय की कहानी चारों ओर गाई जाने लगी। हमको आगे चलकर इटली में इनकी महान् सेवाओं का वर्णन करना है अतः यहाँ इतना स्थान नहीं है कि सम्पूर्ण बातें विस्तार के साथ लिखी जायँ; अतएव हम संक्षेप में ही दक्षिण अमरीका के संग्राम का हाल लिखेंगे।

गैरीबाल्डी कभी आलस्य से बैठना जानते ही न थे। इसी कारण जब इनका ब्रेज़िल-युद्ध बहुत सफलीभूत हुआ तथा

ग्रेन्दे राज से सन्धि की बातें होने लगीं तब इन्होंने युरुगुवे राज्य की नौकरी कर ली। इस राज्य में भी इस समय स्वतंत्रता-संग्राम चल रहा था। इनका यश तो फैल ही रहा था अतएव फ़ौरन इनको एक छोटा सा जहाज़ी बेड़ा देकर, रोज़ा की सेनाओं का सामना करने के लिए, कारिंतीज़ स्थान को भेजा गया।

यहाँ पर जल सेनापति ब्राउन की जहाज़ी सेना से इनका ज़बर्दस्त मुक़ाबला हुआ; लेकिन, गैरीबाल्डी हताश होने वाले न थे। जब इन्होंने अपनी विजय के कोई लक्षण न देखे, गोला-बारूद आदि सभी कुछ ख़तम हो चुका, तब इन्होंने अपने जहाज़ों को जला दिया; लेकिन, शत्रु के हाथ में उनको न पड़ने दिया और आप वहाँ से भाग निकले। यहाँ से भागकर आप सीधे फिर मांटवीडो पहुँच गये।

मांटवीडो में आपने वहाँ के प्रवासी इटालियनों का एक बड़ा ज़बर्दस्त दल तैयार किया। इस दल को अच्छी तरह सुशिक्षित बना कर आपने युरुगुवे राज्य की स्वाधीनता की प्राप्ति के लिए घोर संग्राम आरम्भ कर दिया। सन् १८४६ में आपने केरो और सन्त अन्तोनियों की प्रसिद्ध लड़ाइयाँ जीतीं और इसी विजय ने युरुगुवे की स्वाधीनता पक्की कर दी।

युरुगुवे की सरकार इनकी कितनी कृतज्ञ थी—यह तो पाठक सोच ही सकते हैं। उन्होंने इनकी हर प्रकार से सेवा

करनी चाही। इन्हें धन, ज़मीन, पदवियाँ प्रदान करने के लिए सभी उतावले थे; पर, गैरीबाल्डी ने यह कहकर अस्वीकार कर दिया कि "मैंने अपने कर्त्तव्य का पालन किया है।" यह कितना बड़ा त्याग है?

किन्तु, इस युद्ध के बीच में ही, गैरीबाल्डी के जीवन में बड़ा परिवर्त्तन हो गया था। ये कुमार होने के स्थान पर विवाहित हो गये थे; पर, शायद ही हमको सौ में पाँच ऐसी वीराङ्गना स्त्री मिलें जैसी इनकी थी। स्त्री क्या थी, देवी थी। वह गैरीबाल्डी को जितना प्यार करती थी, उतनी ही इनको युद्ध में सहायता देती थी, प्रोत्साहन देती थी, इनके साथ लड़ाई के मैदान पर जाती थी और इनकी सभी मुसीबतों में भाग लेने की चेष्टा करती थी।

इस ललना से हमारी उन कमज़ोर स्त्रियों का मुक़ाबला कीजिए जो रात को घर में चूहे की आवाज़ से भी डर उठती हैं। इस स्त्री का हमारी उन स्त्रियों से मुक़ाबला कीजिए जो अपने पतिदेव को स्वदेश-सेवा में जेल जाते देखकर धाड़ मार कर रोने लगती हैं मानो कोई मर गया है। जबतक हमारी मातायें, स्त्रियाँ वीराङ्गना न होंगी तबतक पुरुष और भावी सन्तान में कापुरुषता भरी ही रहेगी।

उस महिला का नाम था एनिटा। वह अपूर्व रूपवती स्त्री थी। गैरीबाल्डी से विवाह होने के पहले, किसी

अन्य आदमी से उनकी मंगनी भी हो चुकी थी; पर, इस इटालियन वीर की वीरता, साहस तथा सुन्दरता को देख कर वे इनके प्रेम में पड़ गई। उनका रूप, उनका सादा जीवन तथा वीरता देखकर गैरीबाल्डी भी उनके प्रेम में पड़ गये, और जिस मनुष्य से उनकी पहले मंगनी हो चुकी थी, वह बेचारा मुंह ताकता ही रह गया और गैरीबाल्डी विवाह एनिटा से हो गया। विवाह के कारण गैरीबाल्डी के काम में किसी प्रकार शिथिलता न आई। युरुगुवे प्रान्त स्पेनी-आधीनता के विरुद्ध पुनः युद्ध कर बैठा और उसमें गैरीबाल्डी को जाना पड़ा।

गैरीबाल्डी जिस जहाज़ी बड़े के अधिकार में थे, उसने शत्रु की दुगनी बड़ी सेना को बुरी तरह हरा दिया। इनकी वीर पत्नी एनिटा—तलवार लेकर लड़ रही थी और सैनिकों को लड़ने के लिए उत्साहित कर रही थी।

एनिटा के साहस की कहानी इतनी रोचक है कि, यदि हम उसको लिखना प्रारम्भ करें तो एक बड़ा ग्रन्थ लिखा जा सकता है। ऊपर हम एनिटा के पराक्रम का कुछ हाल लिख आये हैं उसके बाद भी युद्ध समाप्त न हुआ और शान्ति न मिली। उसके बाद ही गैरीबाल्डी लेग्यूना गये। वहाँ की जनता प्रजातन्त्र राज्य के विरुद्ध उभर रही थी; पर, गैरीबाल्डी को आगे बढ़ते ही एक बहुत बड़ी जल-

सेना का सामना करना पड़ा। इस अवसर पर एनिटाने स्वयं तोप चलाई थी; पर, संग्राम में बिना सहायता के अपनी सफलता का कोई लक्षण न देखकर, गैरीबाल्डी ने अपनी स्त्री के द्वारा एक पत्र अपनी सेना के बड़े सरदार के पास इस आशय का भेजा कि, यदि शीघ्र सहायता न मिलेगी तो मैं लड़ाई छोड़ दूँगा और जहाज़ में आग लगा दूँगा। स्त्री के हाथ पत्र भेजने का मतलब यह था कि, ऐसा करने से इनकी स्त्री ख़तरे से बच जायगी; पर, एनिटाने जब सेना की सहायता न पाई तो वह फिर गैरीबाल्डी के पास लौट आई। गैरीबाल्डी को जहाज़ में आग लगा कर भागना पड़ा।

इसी बीच में एनिटा गर्भवती हो गई। पाठकों को यह सुनकर आश्चर्य होगा कि गर्भवती होने की दशा में भी, वह युद्ध भूमि में अपने पति की सहायता करती रही, १० वें महीने उनके एक पुत्र उत्पन्न हुआ। उसका नाम मिनाट्टो रक्खा गया। पैदायश से ही उस बालक के सिर में एक घाव था—जिस समय वह पेट में था, एनिटा घोड़े से गिर पड़ी थी—संभव है उसी समय बच्चे को घाव लगा हो।

घोर-दारिद्र्य

गैरीबाल्डी का जीवन बड़ा दरिद्रतापूर्ण जीवन था। इसका कारण यह था कि, राज्यों की सेवाओं के लिए ये

कुछ पुरस्कार लेते नहीं थे। दिन भर जङ्गलों में घूम कर शिकार करके खाना तो मिल ही जाता था; पर, वस्त्र का प्रबन्ध कहाँ से होता? इनका बच्चा ठण्ढ के कारण मृतःप्राय हो गया। उसके कुरते का प्रबन्ध करने के लिए गैरीबालडो एक बार दो गाँवों में घूम आये, फिर भी कुरता न मिला!

निर्धनता का हाल यहाँ तक था, कि, युरुगुवे की पूरी सेवा कर चुकने पर भी, वहाँ से इनाम लेना नामंज़ूर कर दिया। आप एक झोंपड़े में रहते थे। फटा-पुराना वस्त्र पहन रखते थे, पर चिराग़ बत्ती के लिए पैसा न था। उस समय की एक रोचक कहानी है जो इस प्रकार है—एक बार एक फ़रांसीसी कप्तान इनसे मिलने के लिए आया। किसी प्रकार वह झोपड़ी का द्वार खोलकर भीतर घुस गया। रात का समय था। गैरीबाल्डी को पुकारने पर गैरीबालडी तो आ गये; पर, अधिक अन्धकार के कारण वह कप्तान एक कुर्सी से टकराकर गिर पड़ा। उसने मज़ाक़ में गैरीबाल्डी से कहा—"क्यों भाई, तुम मिलने आने वाले की जान लेते हो?" इटालियन वीर ने अपनी स्त्री को पुकार कर प्रकाश लाने के लिए कहा। उसने उत्तर दिया—"मोमबत्ती के लिए पैसे तो हैं नहीं।" तब उस फरांसीसी कप्तान ने अंधेरे में ही बैठकर बात की।

दूसरे दिन उस फ़रांसीसी ने बीस पौंड यानी, लगभग ३००) रुपये इनके पास भेज दिये। किन्तु, गैरीबाल्डी किसी का पैसा लेने वाले नहीं थे। फिर भी इन्होंने उस दानी को दुःख न

देने के विचार से रुपया लौटाया नहीं, बल्कि, उन रुपयों को ग्राम की विधवाओं तथा दरिद्रों में बाँट दिया। हाँ, इस डर से कि कहीं वह फ़रांसीसी रात में फिर न आ जाय, मोमबत्तियाँ ख़रीदने के लिए कुछ पैसे बचा लिये थे।

गैरीबालडो यदि चाहते तो लाखों रुपये इनके पैरों पर लोट सकते थे। किन्तु, महान् पुरुषों में तथा हम साधारण मनुष्यों में यही तो एक बड़ा अन्तर है? महान् आत्माओं के लिये तो—

पर द्रव्येषु लोष्ठवत्—दूसरे का धन मट्टी के समानहै।

स्वदेश से पुकार

इधर गैरीबालडी दक्षिण अमरीका मे युद्ध कर रहे थे, उधर इटली में, मेज़िनी की कोशिशों से भयानक आग फैल रही थी। १८४७ के अन्त में, इन क्रान्तिकारियों की तैयारियाँ पूरी हो चुकी थीं और यामी नामक स्थान की उत्तराधिकारिणी के मर जाने के कारण जब यह सवाल पेश हुआ कि यह राज्य फ्रांस को मिल जाय तब यह आग ज़ोरों से फूट निकली।

मेज़िनी ने इस अवसर को हाथ से न जाने देने के लिए पूरी तैयारी कर रक्खी थी। इन्होंने जहाँ कहीं भी इटली के देश-भक्त रहते थे, अपना जोशीला निवेदन भेज कर उनसे देश की लाज रखने की प्रार्थना की। पोप पापस चतुर्थ

की कहानी तथा पीडमौंट के चार्ल्स अलबर्ट का नीचतापूर्ण नाटक हम मेज़िनी की जीवनी में बतला चुके हैं। उस घटना को यहाँ फिर से दुहराने की ज़रूरत नहीं है। किन्तु पोप की राष्ट्रीयता का भण्डाफोड़ अभी नहीं हुआ था—हम इस स्थान से असली घटना प्रारम्भ करते हैं। जब पोप ने राजनीतिक क़ैदियों की रिहाई की घोषणा की तथा प्रजा को अधिकार देने की बात होने लगी, तब आस्ट्रिया के सम्राट् ने समझा कि, यह व्यक्ति क्रान्तिकारियों से मिल गया है तथा हमारी हानि करने पर तुला है। इस भय से उन्होंने १८४७ के ग्रीष्मकाल में पोप की सीमा में अपनी एक सेना छावनी डालने के लिए भेज दी।

आस्ट्रिया के शाह का यह कार्य मूर्खतापूर्ण था। इटली में कहाँ तो आस्ट्रिया के विरुद्ध हवा बह रही थी, कहाँ धर्म गुरु का ऐसा अनादर देख कर राष्ट्रीय तथा अ-राष्ट्रीय सभी उखड़ गये और उन्होंने बड़ा हल्ला मचाया। पोप भी इस अपमान से बहुत नाराज़ होगये और कई राजाओं की कौंसिल ने बैठ कर यह निश्चय किया कि, यदि शाह आस्ट्रिया अपनी सेना न हटालें, तो युद्ध की घोषणा कर दी जाय। युद्ध की घोषणा कर दी गई और शाह ने सेना हटा ली।

इसी अवसर पर मेज़िनी ने वार करने का अच्छा मौक़ा समझा। उनको फ़ौरन गैरीबाल्डी का ध्यान आगया।

जिस समय गैरीबाल्डी ने इटली छोड़ी थी, इनको कोई जानता भी न था। पर मेज़िनी तो इनके गुरु थे। इसलिए ये सदैव उनको पत्र लिखा करते थे और मेज़िनी को इनका कार्य मालूम होता रहता था। वे उन अचल-कीर्ति-समाचारों को अपने समाचार पत्रों द्वारा यूरोप तथा इटली को सुनाया करते थे। परिणाम यह होता था कि सारा इटली इस योद्धा को देवता के समान पूजने लगा था और कितने ही युवक तो इनके झण्डे के नीचे काम करने के लिए इतने अधीर हो गये कि अमरीका पहुँच गये।

अपना बलवा शुरू करने के पहले मेज़िनी ने गैरीबाल्डी को इटली आने के लिए एक पत्र लिखा। गैरीबाल्डी को समय-समय पर अपने देश की जो याद आती थी, उसका वर्णन हम कर चुके हैं। इस वीर का हृदय स्वदेश-सेवा के लिए पीड़ित हो उठता था। दूर अमेरिका में बैठे हुए भी ये देश की दशा की बराबर टोह लेते रहते थे। जब वहाँ की क्रान्ति की सम्भावना और जागृति का समाचार इनको मिला, तब इनकी आत्मा प्रसन्न हो उठी—इसी समय गैरीबाल्डी को गुरु का पत्र मिला। अब क्या चाहिए था।

गैरीबाल्डी स्वदेश लौटने के लिए पहले से ही विचार कर रहे थे। जब पोप की राष्ट्रीयता तथा देश-भक्ति के झूठे समाचार इनको मिले, तब इन्होंने पोप को इटली की राष्ट्रीयता

का सबसे सच्चा सेवक समझा और उनकी अधीनता में देश-सेवा का निश्चय करके उनको एक पत्र लिखा। अक्टूबर १८४७ में इनका वह पत्र भेजा गया; किन्तु, पोपने उस पत्र का कोई उत्तर नहीं दिया।

स्वदेश-यात्रा

दक्षिण अमरीका में रह कर गैरीबाल्डी ने सबसे बड़ा काम यह किया कि, जो भी कोई इटालियन इनको मिला, उसको सिखा-पढ़ा कर इन्होंने एक बड़ी सेना तैयार करली। स्वदेश से पुकार आते ही, इन्होंने हरएक इटालियन के नाम यह प्रार्थनापत्र निकाला कि, स्वदेश की ओर लौट चलो। इसके अलावा, इन्होंने यात्रा-व्यय के लिए चन्दे की भी अपील की।

मांटेवीडो नगर—जिसके लिए गैरीबाल्डी ने इतना काम किया था तथा जहाँ गैरीबाल्डी के रहने के कारण ही वह नगर शत्रु से भी सुरक्षित था—यह जानकर बड़ा दुःखी हुआ कि यह वीर नगर छोड़ देगा इसलिए इनके मार्ग में भाँति-भाँति की ऐसी अड़चनें डाली गईं कि जिनके कारण ये मांटेवीडो से न जा सकें—पर गैरीबाल्डी ऐसी साधारण मूर्त्ति न थे कि इन बाधाओं से डर जाते। इन्होंने यात्रा का पूरा प्रबन्ध कर लिया।

जो जहाज़ इनको ले जाने वाला था तथा जिस पर अन्य इटालियन जाने वाले थे, उसने भाड़ा भी चौगुना कर दिया। परिणाम यह हुआ कि इन्होंने अपने पहनने के वस्त्रों को छोड़ कर सब सामान बेच कर जहाज़ भाड़ा चुका दिया। इनकी इस अनुपम देश-भक्ति को देख कर एक जिनोई व्यापारी ने इनको बहुत बड़ी रक़म दी। जब इनका जाना निश्चित हो ही गया तब मांटेवीडो वालों ने दो बन्दूकें तथा कई तोपें इनको दीं। सब सामान से सुसज्जित होकर गैरीबाल्डी स्वदेश की ओर चल निकले।

श्रीरामचन्द्र जी को भी चौदह वर्ष का वनवास हुआ था—गैरीबालडी को भी आज चौदह वर्ष इटली छोड़े हो चुके थे। इटली जाना निश्चित समझ कर ही इन्होंने अपनी स्त्री को एक मित्र के साथ पहले ही भेज दिया था। इटली में जब नाइस नगर—(ग्राम) के सामने ये पहुँचे, तब आनन्द प्रेम तथा उमङ्ग से इनका हृदय उमड़ पड़ा। झट तिरङ्गा इटालियन झण्डा लेकर आप ख़ास तट पर ही उतरे—कूद पड़े। यद्यपि फाँसी की सज़ा अब भी इनके सिर पर झूल रही थी, फिर भी इनका प्रेम इतना उमड़ आया था कि, ये अपने को रोक न सके और छिप कर उतरना अस्वीकार कर दिया।

मातृभूमि की यही महिमा है! संसार में घर से बढ़ कर प्यारी वस्तु कोई नहीं है। जिस समय हम घर छोड़ कर बाहर जाते हैं, उस समय हमें उसका प्रेम तथा प्यार समझ में आता

है। फिर घर के साथ ही प्यारी माता का—जन्म देने वाली माता का दर्शन पाना था—उस समय माता का हृदय कितना पुलकायमान, कितना चञ्चल हो रहा था—कूद कर गैरीबालडी अपना माता से चिपट गये। इनकी स्त्री भी अपने बच्चों के साथ यहीं खड़ी थीं। इन्होंने अपने बच्चों को चूमा। गैरीबालडी के तीन बच्चे थे—मेनोट्टी, रिसियोट्टी, एनिता।

नेता

मेज़िनी की ज़ोरदार कलमने गैरीबालडी के लिए जो आदर युक्त स्थान इटली में बनवा रक्खा था, उसका प्रभाव जादू सा था। इटली के नौजवान इस वीरात्मा के झण्डे के नीचे लड़ने के लिए मतवाले हो रहे थे। इनके स्वागत के लिए नाइस के तट पर जो अथाह भीड़ उमड़ पड़ी थी, उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। सैकड़ों नवयुवक इनकी आधीनता में, देशोद्धार के काम में अवैतनिक स्वयंसेवक बनने के लिए उत्सुक हो रहे थे। उन्होंने अपनी सेवायें इनको अर्पित कर दीं—२४ जून १८४८ को, तीन महीने की यात्रा करके गैरीबालडी ने इटालियन भूमि पर पैर रक्खा था—और उसी समय इटली के कई एक भागों में विद्रोह हो रहा था। मेज़िनी इटालियन भूमि पर स्वयं आकर अपना जादू चला रहे थे।

नाइस में गैरीबालडी ने विशेष आराम न किया। आप फ़ौरन सीमा की ओर लड़ाई के लिए चल दिये। मेज़िनो की

जीवनी में पाठकों ने पढ़ा होगा कि चार्ल्स अलबर्ट, शाह पीडमौंट किस प्रकार इटालियन क्रान्तिकारियों के अगुआ बन गये थे। किस प्रकार उन्होंने क्रान्तिकारियों से मिल कर आस्ट्रिया को निकाल बाहर करने का बीड़ा उठाया था, उधर अँग्रेज़ी राजदूत से यह कहला दिया कि, मैं बलवाइयों द्वारा जीते राज्य को सुशासन में रखने के लिए युद्ध कर रहा हूँ। पर, इन्होंने युद्ध में दस्तन्दाज़ी इस नीयत से की थी कि, प्रजातन्त्र की भावना न उठे और राजा का ही दबाव रहे।

गैरीबाल्डी ने चार्ल्स अलबर्ट को उस समय का इटालियन राष्ट्रीयता का अगुआ समझा, अतएव ये उनके पास गये। अलबर्ट इनसे बड़ी प्रतिष्ठा के साथ मिले; पर, ऐसे भीषण आदमी को अपने पास रखने में उन्हें भी भय लगता था, अतएव काम देने में टालमटूल करते रहे। गैरीबाल्डी को बड़ी कठिनाई से स्वयं सेवक सेना भर्ती करने की आज्ञा मिली और इन्होंने फ़ौरन तीन हज़ार सिपाहियों की एक सेना तैयार करली। किन्तु, सेना तैयार हो जाने से ही क्या होता, उसको लड़ने के लिए कहीं अवसर ही नहीं मिल रहा था, क्योंकि, शाह तो आस्ट्रिया से सन्धि की बातचीत कर रहे थे।

इस समय मिलन तो आस्ट्रिया की आधीनता छोड़ कर स्वाधीन हो चुका था। अलबर्ट ने गैरीबाल्डी को अपने पास न रख कर बड़ी मूर्खता की; क्योंकि, वे मेज़िनी सरीखे उग्र और पूर्ण

प्रजातन्त्रवादी से मिल गये और अकेले ही आस्ट्रियनों से लड़ने की तैयारी करने लगे। जिस समय मिलन के पास गैरीबाल्डी पड़ाव डाले पड़े थे और मेज़िनी मिलन में 'डिफ़ेन्स (रक्षा) कमेटी' बनाकर जोश के साथ जनता को आस्ट्रियन सेना के विरुद्ध लड़ने के लिए तैयार करा चुके थे उस समय पोडमौंट के बादशाह ने आकर, पुनः अड़ंगा लगा कर मिलनवालों को अपने जादू में करके, मिलन की रक्षा की शपथ खाकर शाही भवन में पड़ाव डाल दिया। मेज़िनी उस समय भाग कर गैरीबाल्डी के पास चले गये। हम यह सब हाल विस्तार के साथ मेज़िनी के जीवनचरित्र में दे आये हैं। मिलन के साथ विश्वास-घात करके शाही सेना भाग गई और वह दूसरे ही दिन आस्ट्रियन सेना के आधीन हो गया। उस समय गैरीबाल्डी को लेकर मेज़िनी रात-दिन पानी में भीगते-दौड़ते मिलन पर चढ़ दौड़े—पर इतनी विशाल सेना के सामने जमना कठिन होने के कारण अन्त में मेज़िनी ने युद्ध बन्द करा दिया। किन्तु, गैरीबाल्डी ने अकेले ही शाह पोडमौंट व शाह आस्ट्रिया के विरुद्ध युद्ध करने का निश्चय कर लिया और मेज़िनी से धन-जन की सहायता पाकर, केवल १५०० आदमी लेकर ही ये सीमा पर लड़ने के लिए चले गये।

सीमा पर आस्ट्रियन सेना से गहरी मुठभेड़ हुई। गैरी बाल्डी ने लुइनो में शत्रु-सेना को बुरी तरह पछाड़ा। लुइनो को ज्वर आगया था, तिस पर भी ये लड़ते रहे। पर विजय के

बाद, संध्या समय, जब कि, सेना विश्राम की तैयारी कर रही थी, शत्रु-सेना ने यकायक छापा मारा। वीर शिरोमणि गैरीबाल्डी पहले ही तलवार लिए निकल आये और इन्होंने ज्वर की अवस्था में ही अपनी सेना को नाश होने से बचाया। किन्तु पीछे तो हटना ही पड़ा और अपने को निरुपाय पाकर, इन्होंने सिपाहियों को घर लौट जाने की आज्ञा दे दी। ये ज्वर की अवस्था में ही स्विट्ज़रलैंड चले गये। इन्होंने पीडमौंट के विरुद्ध भी अस्त्र उठाया था, इन्हें उनके राज्य में घुसने की मनाही थी, इसलिए गैरीबाल्डी ने कुछ समय के लिए अन्तर्ध्यान होना ही उचित समझा।

रोम का बलवा

स्विट्ज़रलैण्ड में कुछ दिन रहने से इस वीर का ज्वर जाता रहा। वहाँ से चङ्गे होकर तथा थोड़ा विश्राम कर लेने के बाद गैरीबाल्डी पुनः स्वदेश को लौटे। पाठकों को स्मरण होगा कि १८४८ की क्रान्ति किस प्रकार असफल रही। यद्यपि इसमें जनता ने भी भाग लिया था पर पीडमौंट के सुधार-वादी तथा स्वाधीनता-प्रेमी कहे जानेवाले शाह की नीचता के कारण यह असफल रहा। मेज़िनी भी निराश होकर स्विटज़रलैण्ड होते हुए लन्दन चले गये; किन्तु, गैरीबाल्डी अधिक दिन तक बाहर न रह सके। ये पुनः नाइस पहुँच गये।

पीडमौंट के बादशाह गैरीबाल्डी को एक बार भूल से खो

चुके थे। गैरीबाल्डी यद्यपि वीर शिरोमणि थे, तथापि इनमें और मेज़िनी में यह अन्तर था कि, मेज़नी का यह निश्चित सिद्धान्त बन गया था कि, प्रजासत्तात्मक वा प्रजातन्त्र राज्य ही इटली का उद्धार करेगा पर, गैरीबाल्डी ने राजनीतिक सिद्धान्त कोई नहीं बनाया था। मेज़िनी उसके गुरु ज़रूर थे, पर वे स्वदेश-भक्ति का पाठ सिखलाने तक ही गुरु थे। दोन का कार्यक्रम एक नहीं था। गैरीबाल्डी राजाओं से नफ़रत नहीं करते थे। पीडमौंट के बादशाह यह जान गये थे, इसी कारण उन्होंने नाइस में ही इनके पास यह सन्देश भेजा कि आप हमारी शाही सेना में ऊँचे जनरल नियुक्त किये गये हैं। कृपया चले आइए।

इसी समय वेनिस वीरता के साथ आस्ट्रियन सेना का मुक़ाबला कर रहा था। गैरीबाल्डी का ध्यान उस नगर की सहायता की ओर जा चुका था। ये पीडमौंट की नपुंसक-नीति से रुष्ट हो चुके थे। इन्होंने इस प्रतिष्ठा को लात मार दी। आप २५० आदमी लेकर वेनिस की ओर चल पड़े—किन्तु राह में ही रोम की घटनाओं के कारण इन्हें वहाँ जाना पड़ा।

मेज़िनी के जीवन-वृत्तान्त में रोम के विप्लव की कहानी तथा पोप के भाग जाने का वृत्तान्त हम दे चुके हैं। मेज़िनी इस समय पुनः इटली में आगये थे और उन्हीं के आग्रह तथा दबाव के कारण रोम में प्रजातन्त्र राज्य की घोषणा हो चुकी थी।

पर, रोम के सामने सबसे बड़ी विपत्ति बाहरी शत्रुओं का सामना करना था और मेज़िनी को इसीलिए गैरीबाल्डी की ज़रूरत पड़ी। गैरीबाल्डी रोम की महासभा के सदस्य भी बना लिये गये।

मेज़िनी की भूल

रोम में विप्लवकारियों का राज्य सुनकर फ्रांस तथा आस्ट्रिया की सेना चढ़ दौड़ी। फ्रांस सदैव से अपने को विप्लवकारियों का मित्र बतलाता था क्योंकि, फ्रांस में "स्वाधीनता, समानता, बन्धुत्व" के नाम पर सब कुछ होता था; पर, इटली के लिए यह पूरा पाखण्ड था और फ़रांसीसी सेना यद्यपि अपने को विप्लवकारियों की सहायक कहकर चढ़ी आरही थी, फिर भी उसकी इच्छा पोप को गद्दी दिलाने की थी; पर, मेज़िनी ने यही समझा कि ये हमारे मित्र हैं।

गैरीबाल्डी ने पहले ही से कह दिया कि ये दुश्मन बनकर आरहे हैं। इनका आगे बढ़कर मुक़ाबला करना चाहिए। अन्त में मेज़िनी गैरीबाल्डी की सलाह में आगये और उन्होंने सेना तैयार करने की आज्ञा दे दी। बात की बात में गैरीबाल्डी की २५०० सेना तैयार होगई। इसमें बहुत से कालिज के छात्र थे। गैरीबाल्डी को कर्नल की पदवी दी गई। इन्होंने सेना की पूरी तैयारी करली।

मेज़िनी को अभी तक फ्रेंच सेना की मित्रता का धोखा था; पर, गैरीबाल्डी ख़ूब समझ गया था और इस वीर ने रोम की दीवारों की मोर्चेबन्दी करा रक्खी थी। फ्रेंच सेना के निकट आते ही, रोम का बड़ा घण्टा बज उठा और अपनी स्वाधीनता के लिए मतवाले लोग जिसके हाथ जो हथियार पड़ा, लेकर दौड़ पड़े। फ्रेंच सेना के वेतनभोगी सिपाही देश-प्रेम की इस लहर के सामने कहाँ तक टिक सकते थे। वे बेचारे भाग खड़े हुए। गैरीबाल्डी ने आज्ञा माँगी कि उनका पीछा करके उनको नेस्तनाबूद कर दिया जाय—पर मेज़िनी को अब भी उम्मीद थी कि फ्रांस की स्वाधीन तथा प्रजातन्त्र प्रेमी सेना हमारा संहार क्योंकर करेगी! उन्होंने दुबारा फ़रांसीसी सेना को हराकर, फ्रांस को नाराज़ कर, विप्लव संग्राम में उनकी सहायता से हाथ धोना उचित न समझा। गैरीबाल्डी बकता ही रह गया, क्योंकि, यह तो एक साधारण कर्नल था और मेज़िनी के हाथ में शासनाधिकार था। अन्त में इनको युद्ध बन्द करना ही पड़ा।

रोम का पतन

गैरीबाल्डी जो चाहते थे वह यदि न हो पाया तो क्या, इनको तलवार चलाने का मौक़ा तो मिल ही गया। क्योंकि ये

कहते थे कि जो कोई मुझे तलवार चलाने का मौक़ा देगा उसका मैं बड़ा उपकार मानूँगा।

नेपुल्स तथा सिसली के बादशाह फ़र्डिनेण्ड भी पोप का राज्य क्रान्तिकारियों के हाथ से निकलवाने के लिए रोम पर चढ़े चले आ रहे थे। उनकी सेना का सामना करने के लिए गैरीबाल्डी को भेजा गया। १६ घण्टे की मञ्ज़िल एक साथ पूरी कर आप फ़र्डिनेण्ड की सेना की राह में छावनी डालकर बैठ गये। यद्यपि उसकी सेना बीस हज़ार थी, फिर भी उसको पराजित कर तित्तर-बित्तर कर दिया और सरहद से निकाल दिया।

इस विजय के कारण गैरीबाल्डी का नाम ही नेपुल्स सेना में भगदड़ मचा देता था। लोग इनको राक्षस समझते थे। गैरीबाल्डी चाहते थे कि पहले राजा फ़र्डिनेण्ड की सेना पूरी तरह मटिया मेट करके तब कोई दूसरा काम किया जाय; पर, इसी समय मेज़िनी ने इन्हें रोम बुला लिया—फ़रांसीसी सेना ने दुबारा फिर आक्रमण कर दिया था। मेज़िनी का ख़याल ग़लत निकला और गैरीबाल्डी की बात सच निकली।

इस बार फ़रांसीसी बहुत ज़बर्दस्त सेना लाये थे; परन्तु गैरीबाल्डी निराश नहीं हुए। इन्होंने युद्ध प्रारम्भ किया; पर, फ़रांसीसी सेना को हराना असम्भव समझ कर इन्होंने युद्ध बन्द करने की सलाह दी। इस समय मेज़िनी का क्रोध और आत्म-सम्मान बहुत भीषण हो रहा था। वह इस प्रस्ताव

को सुनना भी नहीं चाहता था। इधर रोम का पतन भी हो रहा था। रोम की राष्ट्रीय-सभा भी युद्ध बन्द करने के पक्ष में थी ; पर, अकेले मेज़िनी लड़ने के पक्ष में थे। उनका कहना था कि चाहे सारा रोम भस्म हो जाय तो भी, युद्ध बन्द न होगा। और प्राण रहते हम अवश्य लड़ेंगे।

गैरीबाल्डी प्राण-भय से नहीं, वरन् विजय को असम्भव समझ कर युद्ध बन्द करने को सलाह दे रहे थे। इन्होंने मेज़िनी को यही सलाह दी। इसी कारण इनका उनसे मतभेद हो गया और यह मनमुटाव अन्त समय तक बना ही रहा।

फ्रांस की सेना गोलाबारी से रोम को नष्ट कर रही थी। अन्त में, ३० जून को, जब कि, फरांसीसी सेना ने बड़ा भयंकर आक्रमण किया, तब गैरीबाल्डी राष्ट्रीय गीत गाता अपनी बची-खुची सेना लेकर निकला और भीषण युद्ध किया; पर, शत्रु-सेना बहुत ज़्यादा थी। रोम वाले भी लड़ते-लड़ते जर्जर हो रहे थे। गैरीबाल्डी गोलियों से कई जगह चोट खा चुका था। गैरीबाल्डी के कई स्थान पर तलवार के घाव लग चुके थे। अन्त में यह महासभा की बैठक में उसी अवस्था में पहुँचा और साफ़ कह दिया कि, युद्ध में, विजय पा सकना असम्भव है। अब भी युद्ध बन्द करा दीजिए। व्यर्थ जानें जा रही हैं।

मेज़िनी इस बार भी अचल रहे पर महासभा ने युद्ध

बन्द करा दिया। ३० जून सन् १८४८ में रोम का प्रजातन्त्र-राज्य समाप्त हो गया। गैरीबाल्डी ने नगर छोड़ दिया। जाते समय इन्होंने साफ़ कह दिया कि मेरे साथ जो मनुष्य चलेगा उसे घोर से घोर यातना भोगनी पड़ेगी फिर भी चार हज़ार स्वयंसेवक इनके साथ चलने को तैयार हो गये। रोम छोड़ते समय गैरीबाल्डी को अपार दुःख हुआ।

मेज़िनी भी भाग गये—उस वीर तथा शेर को भला कौन पकड़ सकता था। मेज़िनी को रोम से बड़ी आशा थी। उन्होंने इसे अपने स्वप्न का सत्य होना समझा था पर ज़रा सी नासमझी के कारण रोम उनके हाथ से चला गया, क्रान्ति की आशालता उस समय मुरझा गई। वे भी भागकर लन्दन पहुँचे। यदि उन्होंने गैरीबाल्डी की सलाह मानकर फ़रांसीसी साँप की दुम ही न कुचली होती—तो शायद ऐसा अनर्थ न होता—किन्तु, जो होनेवाला होता है, वही होता है। रोम पर पोप का झण्डा फहराने लगा।

एनिटा की पति-भक्ति

यदि गैरीबाल्डी का यश-सूर्य प्रत्येक युवक के हृदय में अपूर्व ज्योति उत्पन्न कर सकता है तो एनिटा की पति-भक्ति भी संसार में स्वर्णाक्षरों में लिखे जाने योग्य है। इस स्त्री के जोड़ की पति-भक्ति इस कलियुग में मिलना असम्भव है। यूरोप के इतिहास

में इस देवी के समान उज्ज्वल चरित्र हमको किसी महिला का नहीं दीखता।

पाठकों को यह पढ़ कर आश्चर्य होगा कि इन सम्पूर्ण विपत्तियों के समय, रोम के विप्लवके समय, रोम से निकल भागने के समय यह आदर्श वीराङ्गना अपने पतिदेव के साथ थी और वह भी किस अवस्था में—जब कि,इसके पेट में बच्चा था। गर्भवती स्त्रियाँ दौड़ नहीं सकतीं—यह महिला घुड़सवारी करती थी। रोम के पतन के बाद जब गैरीबाल्डी निकल भागे तब भी यह महिला उनके साथ ही थी। इसने अपने बाल कटा डाले थे। मरदाना वेष धारण कर लिया था और लगातार पति के साथ रहती थी।

एनिटा को परिश्रम के कारण ज्वर आ जाता था, शरीर में अपार वेदना होती थी, पर एक भी पड़ाव पर यह महिला ज़रूरत से अधिक आराम करने के लिए नहीं रुकी और न पति को रुकने दिया। जब कभी गैरीबाल्डी कोई सुरक्षित स्थान बतला कर इससे वहीं रह जाने के लिए कहते तो आप ताने से कहतीं कि मालूम होता है आप मुझे प्यार नहीं करते, तभी अपने पास से हटा रहे हैं। भला इस बातका उत्तर गैरीबाल्डी क्या देते। बेचारे चुप रह जाते।

मरते दम तक इस महिला ने पति का साथ न छोड़ा और अन्त में ऐसे स्थान पर मरी जहाँ ठीक तरह क़ब्र खोद कर उसको दफ़नाया भी न जासका—

घोर कष्ट

रोम में, गैरीबाल्डी की विदाई के समय, भावावेश में बहुत से स्वयंसेवक इनके साथ हो गये थे। पर ज्यों-ज्यों राह में बहुत कष्ट उठाने पड़े, ज्यो-ज्यों आस्ट्रियन सेना के कारण पीड़ा बर्दाश्त करनी पड़ी, त्यों-त्यों उनकी आँख खुलती गई और वे साथ छोड़ कर भागने लगे। रोमसे चलने के समय, ख़ज़ाने से गैरीबाल्डी ने अपनी सेना के खर्च लायक ही रुपये लिये थे। उन रुपयों में से अपने लिए कुछ भी नहीं बचाया था। अपने ख़र्च के लिए इन्होंने अपनी घड़ी बेच डाली। राह में साथी साथ छोड़कर भागने लगे। आस्ट्रियन सेना का भय हर समय बना रहता था। निदान रात को उठ कर यात्रा करनी पड़ी। फिर भी भय न गया। इतने में ही ये किसी प्रकार सेनमैरिनो के प्रजातन्त्र राज्य में पहुँच गये। इस प्रजातन्त्र ने इनको हर प्रकार की सहूलियत दी तथा सहायता का दिलासा दिया। वहाँ भी इनके पीछे आस्ट्रियन सेना पहुँच गई। बहुत से लोग उसका आना ही सुनकर भगने लगे।

गैरीबाल्डी ने देख लिया कि, अब सेना सम्हालना असम्भव है। साथ ही, आस्ट्रियन सेना सेनमैरिनो के प्रजातन्त्र को गिरफ़ार करा देने के लिए इन्हें परेशान कर रही है, इसलिए इन्होंने अपने साथियों को, अपनी सेना को इटली की स्वाधीनता का उपदेश देकर विदा कर दिया। जो लोग साथ

रहने पर ही तुले थे, उनके लिए तो कोई उपाय न था। इसके बाद गैरीबाल्डी चुपके से रातोंरात सैनमैरिनो से चल निकले।

गैरीबाल्डी का उद्देश्य एड्रियाटिक सागर के किसी न किसी बन्दरगाह में पहुँचना था; किन्तु, आस्ट्रियन सेना शिकारी कुत्ते की तरह इनका पीछा कर रही थी। बड़ी कठि-नाई के बाद—कितने दिन भूखे, प्यासे, थकावट से चूर तथा बीमार स्त्री को सम्हालते हुए, ये सेज़ेंटिको बन्दरगाह पहुँचे। यहाँ पर दस-बारह डोंगियाँ थीं; परन्तु मल्लाहों ने रात के समय उठते तूफ़ान में इनको ले जाना अस्वीकार किया। इधर आस्ट्रियन सेना भी पीछा करती हुई चली आ रही थी।

गैरीबाल्डी हताश या निराश होनेवाले न थे। आपने उन साथियों को, जो साथ में जाने के लिए तैयार हुए, जहाज़ पर चढ़ा लिया। जो तूफ़ान के डर से रह गये, वे किनारे पर छोड़ दिये गये—इस प्रकार सबेरा होने के पहले ही ज्यों ही गैरीबाल्डी समुद्र में चल निकले, त्योंही शत्रु-सेना बस्ती में आ गई। जो लोग रह गये थे, उन बेचारों की बड़ी दुर्दशा हुई! कोई गोली से मार डाला गया, कोई बेंतों से पीटा गया और किसी की खाल उधेड़ ली गई।

समुद्र में, डोंगी पर पानी भी नहीं रक्खा गया था। इधर एनिटा को भयंकर ज्वर चढ़ आया था। वह बेचारी पानी-पानी

चिल्लाने लगी। गैरीबाल्डी भी अत्यधिक परिश्रम करने के कारण प्यास से परेशान थे। बड़े परिश्रम से नाव खेकर ये लोग चले जा रहे थे कि इतने में ही रात्रि हो गई। एनिटा की हालत बिगड़ती जा रही थी। रात्रि उजाली थी। वह रात्रि की चाँदनी ही इनके लिए घातक सिद्ध हुई। कभी-कभी ईश्वर का वरदान भी श्राप हो जाता है। सामने ही आस्ट्रिया का जङ्गी जहाज़ दिखाई पड़ा।

इससे बचने के दो ही उपाय थे। या तो किनारे उतरा जाय या जहाज़ के समीप से लड़-भिड़ कर जाया जाय। राह वही थी, लहर भी उधर को ही थी। किनारे उतरने पर गोलाबारी से उड़ाये जाने का भय था। शत्रु ने दो-तीन डोंगियाँ पकड़ भी लीं; किन्तु, गैरीबाल्डी ने साहस कर किनारे की ओर पैर बढ़ाया।

किनारे उतरते ही जहाज़ की गोलियों से कुछ साथियों के प्राण-पखेरू उड़ गये। पर, गैरीबाल्डी किसी प्रकार एनिटा को उतार लाये। इस समय एनिटा का प्राण कण्ठ तक आचुका था।

एनिटा की मृत्यु

पास के एक गन्ने के खेत में गैरीबाल्डी एनिटा को लिवा गये। एक दयालु किसान ने इनकी बड़ी सहायता की; पर, खेत में पहुँचते न पहुँचते इस पति-परायणा वीराङ्गना के प्राण-पखेरू उड़ गये। खेत में, पति की गोद में लेटकर वह इतना ही कह

पाई कि 'बच्चों को सम्हालिए' और उसका पुण्यआत्मा नश्वर शरीर छोड़ कर उड़ गया।

पाठक गैरीबाल्डी के दुख की कल्पना कीजिए। उस पर कितना भयंकर बज्रपात हुआ। जीवन-यात्रा की सहचरी की मृत्यु संसार में सबसे बड़ा बज्रपात हो सकता है। इस महिला ने इस शेर के जंगल को भी मंगल कर रक्खा था। किन्तु, अब तो गैरीबाल्डी की कमर ही टूट गई—किन्तु, यहाँ रोने का भी समय नहीं था। आस्ट्रियन सेना पीछे दौड़ती चली आ रही थी। रोकर गैरीबाल्डी ने अपनी प्राणेश्वरी के छोटे बालों की जरा सी लट काट ली और वहीं गड्ढा खोद कर उस बालों की लट को गाड़ दिया और भाग खड़े हुए।

ये भागे ही थे कि, इतने में ही आस्ट्रियन सेना आगई। ज्योंही उसको मालूम हुआ कि एक किसान ने गैरीबाल्डी को शरण दी थी, त्यों ही उन्होंने उस दयालु किसान को फाँसी पर लटका दिया। फिर उसकी लाश के टुकड़े-टुकड़े करके फेंक दी।

उस समय, जिस समय कि गैरीबाल्डी भागते रहे होंगे, अपनी 'यातनाओं की सहचरी' तथा 'त्याग की मूर्त्ति' उस प्राणप्यारी का ध्यान आता होगा, तब इन्हें कैसी वेदना होती रही होगी—किन्तु, यह शेर अपनी पीड़ाओं को देश-प्रेम के सम्मुख कुछ भी नहीं समझता था। गैरीबाल्डी को इस प्रसिद्ध चौपाई की पंक्ति का अनुभव हो रहा था—

"आपति काल परखिये चारी।
धीरज धर्म मित्र अरु नारी॥"

धैर्य तो गैरीबाल्डी में अपार था। अनेक यातनायें सहते हुए भी ये मुँह से चूँ तक न करते थे। भूख के मारे भटकते थे, पर एक बार भी, अपनी आत्मा बेचने की भावना हृदय में न उठती थी। जब कभी कोई दयालु मित्र मिल जाता और खाना खिला देता तो खा लेते। आस्ट्रिया की सेना इनका पता लगाती चारों ओर घूम रही था। इनको पकड़वा देने वाले के लिए बहुत बड़ी रकम इनाम में रक्खी गई थी।

इटली की जनता में गैरीबाल्डी का यश इतना छाया हुआ था कि, जहाँ कहीं ये जाते इनका बड़ा आदर सत्कार होता और कभी-कभी तो इसी सत्कार के कारण इनको अपने प्रकट हो जाने का भय हो जाता था। भागते-फिरते गैरीबाल्डी जेनोआ पहुँचे। जेनोआ में इन्होंने रंग-ढंग अच्छे न देख कर नाइस के लिए प्रस्थान किया। बाल-बच्चों को देखे बिना कई मास होगये थे। नाइस में माता तथा पुत्रों से भेंट कर गैरीबाल्डी को शान्ति मिली; किन्तु, कुछ ही समय बाद इनको जेनोआ लौटना पड़ा और यहाँ पर इनको पीडमौंट के बादशाह की 'देश-निकाले' की दण्डाज्ञा मिली—ऐसा भयानक आत्मा देश में रहने योग्य न समझी गई। पीडमौंट के बादशाह मेज़िनी के लेखों की आग से परेशान थे ही, उनको इस जीवित बमगोले से और भी भय लगा—गैरीबाल्डी ने आज्ञा शिरोधार्य्य कर ली।

वनवास में उद्योग

गैरीबाल्डी ने अपना वनवास न्यू-यार्क में ही बिताना उचित समझा। यहाँ इन्होंने मोमबत्ती का कारख़ाना खोल लिया तथा उसीसे जीविका निर्वाह करने लगे। किन्तु, सबसे मज़े की बात तो यह है कि, उस समय, उस स्थान पर संसार के बहुत से देशभक्त वनवास को प्राप्त होकर, साधारण कामों द्वारा जीविका निर्वाह कर रहे थे।

फरांसीसी पार्लामेण्ट के एक सदस्य देश निकाला पाकर गली-गली घूम कर साग-भाजी बेचा करते थे। लूई ब्लाक नाचना सिखला कर रोजी चलाते थे। प्रसिद्ध देशभक्त ला मारटाइन भिक्षा द्वारा उदरपोषण करते थे। इटली के ही, गृह-विभाग में सेना के प्रबन्ध अफ़सर जेनरल प्राँवेजाना गैरीबाल्डी की दूकान के पास ही तम्बाकू की बीड़ियाँ बना कर, गली-गली घूम कर बेचा करते थे।

यहीं हमारे चरित्र-नायक गैरीबाल्डी भी मोमबत्ती के कारोबार से अपना धन्धा चलाने लगे।

द्वीप की ख़रीद

१८५४ तक, अपने इस कारोबार से हमारे इस वीर योद्धा ने कुछ रुपये बचा लिए थे। उन्हीं रुपयों से इन्होंने सार्डीनिया द्वीप के दक्षिण में ५ मील के एक छोटे से टापू केपरेरा को ख़रीद

लिया। यह टापू गैरीबाल्डी ने एकान्त जीवन व्यतीत करने की नीयत से ख़रीदा था। टापू पर आबादी एक प्रकार से थी ही नहीं। गैरीबाल्डी ने इस टापू पर अपने रहने के लिए एक सादा घर बनवाया और कई अच्छे किसान-परिवारों को लाकर वहाँ बसा दिया। अपने लिए गाय तथा अन्य सादगी के सामान लाकर रक्खे। इनकी बहन तथा कन्या ने घर का सारा प्रबन्ध अपने हाथों में ले लिया।

गैरीबाल्डी किसान का सा परिश्रमशील जीवन बिताने लगे। अपने हाथ से कुदाल चलाते, अपने हाथ से बाग़ सींचते तथा पानी भरते थे। सार्डीनिया में, शिक्षा का कोई प्रबन्ध न था। आपने सार्डीनिया वालों की सुविधा के लिए, अपने टापू में एक पाठशाला खोली। साथ ही, इन्होंने इस टापू को हर प्रकार से सुरक्षित करना भी शुरू किया, ताकि, इटली की स्थिति में, किस समय न जाने क्या ज़रूरत पड़े।

केपेरेरा के एकान्तवास में, इस टापू के राजा तो थे ही, उसका सुख भोगते समय भी ये इटली के समाचारों के जानने के लिए उत्सुक रहते थे। १८२४ में ये इङ्गलैण्ड भी गये थे। यहाँ एक तलवार इन्हें भेंट में मिली तथा बड़ा स्वागत हुआ।

इटली का नवीन प्रवाह

पाठकों, जिस समय देश में एक बार स्वाधीनता की लहर उठ जाती है, उस समय संसार की कोई भी शक्ति उसे दबा

नहीं सकती। क्रान्ति के समय स्वाधीनता के सच्चे पुजारी व्यर्थ के कोरे बकवादों में, या राजनीतिक वितण्डावाद में अपना अमूल्य समय नहीं खोते, किन्तु, वे समरक्षेत्र में प्राण देने के लिए तैयार रहते हैं—उनको यह सोचने की इच्छा नहीं होती कि क्या करना चाहिए—बल्कि वे देश के नेताओं की आज्ञा का पालन करते हैं।

ठीक यही हाल हमारे चरित्र-नायक गैरीबाल्डी का था। यह वीर यद्यपि कृषि करके आनन्द के साथ अपना समय बिता रहा था, फिर भी, इनकी दृष्टि सदैव इटली की राजनीतिक प्रगति की ओर लगी रहती थी। ये इस बात की प्रतीक्षा कर रहे थे कि, कब अवसर मिले और कब हम इटली की आग में कूद पड़ें। गैरीबाल्डी को ६-७ वर्ष तक विश्राम करना पड़ा—इनकी तलवार म्यान में पड़ी थी और उसे चलाने का अवसर ही नहीं आ रहा था। एक दिन अचानक इनको पीडमौंट के प्रधान मंत्री का दूत इटली में अपनी तलवार का जौहर दिखलाने के लिए बुलाने आ पहुँचा।

इटली सन् १८४९ के बाद तेज़ी से बदल रहा था। देश में जागृति करने का जितना काम था वह सब मेज़िनी पूरा कर चुके थे। फिर भी मेज़िनी का काम रुका नहीं था। उनका प्रचार लगातार होता जा रहा था। इटली में स्वाधीनता की आग लग चुकी थी; पर, मेज़िनी के लोकतंत्रात्मक सिद्धान्तों

की भित्ति पर इटली में क्रान्ति होना संभव नहीं था। मेज़िनी ने कोशिशें कीं; लेकिन, वे हार गये। इस कारण जनता उनके अगुआपन को अव्यवहारिक समझ रही थी। दूसरे मेज़िनी के सिद्धान्तों तथा स्वयं मेज़िनी के विरुद्ध इटली में ज़ोरों का आन्दोलन हो रहा था—यह कोई कम बात न थी। इस आन्दोलन को पीडमौंट के बादशाह चार्ल्स अलबर्ट ने शुरू कराया था। नर्म विचार के पढ़े-लिखे लोगों ने इस आन्दोलन में पूरी सहायता दी था; पर, अकेले मेज़िनी कहाँ तक सब विपत्तियों से लड़ते। फिर भी उनकी क़लम का जादू ज्यों का त्यों था; पर, उनके व्यक्तित्व का जादू चला गया था।

१८ ९ की क्रान्ति के बाद एक बात निश्चित हो गई थी वह यह कि, इटली अब आस्ट्रिया के शासन में नहीं रह सकता। इटली का स्वतंत्रता-संग्राम, यद्यपि मेज़िनी की चतुराई के कारण सर्वत्र लोकतंत्र राज्य की स्थापना के लिए हुआ था; पर, पीडमौंट के शाह के बार-बार बीच में पड़ने के कारण वह 'आस्ट्रिया के विरुद्ध' क्रान्तिकारी ही हो गया था। इसलिए आस्ट्रिया की सरकार के अत्याचार दिन-दिन बढ़ते जाते थे और जनता एक दम भड़क उठी थी।

इटली का नाना फड़नवीस

इटली में उस समय दो जातियाँ ऐसी उत्पन्न हो गई थीं जिन्होंने मेज़िनी की लगाई आग से लाभ उठाकर इटली को

एक शासन में लाकर स्वतंत्र कर दिया। यद्यपि मेज़िनी की इच्छानुसार प्रजातंत्र स्थापित न हो सका तो क्या; परन्तु, जो राजतंत्र रहा वह आस्ट्रिया के शासन से आज़ाद और उदार था। उनमें एक थे पीडमौंट के नये शाह विक्टर इम्यानुयेल और दूसरे चतुर राजनीतिज्ञ कौंट काबूर। उनमें पहले इम्यानुयेल का परिचय प्राप्त कर लेना चाहिए।

विक्टर इम्यानुयेल नवयुवक थे। उन्हें इटली का नया जीवन गद्दी पर बैठने के पहले ही प्रभावित कर चुका था। उदार शासन का क्या महत्त्व है, इसको इम्यानुयेल ख़ूब समझते थे। इसी कारण वे सुधारपूर्वक शासन करना चाहते थे। इसके अलावा इटली में आस्ट्रिया का रहना उनको फूटी आँखों न सुहाता था। इटली पर प्रभाव डाल कर, मेज़िनी की छिटकाई हुई चिनगारी का लाभ उठाकर, और आस्ट्रिया को निकाल कर समूचे इटली का शासन करना उनको सरल दीख पड़ा—शरीर में जवानी का जोश था। ख़ून उबल रहा था और इस वीर बादशाह के दिमाग़ में यह बात भी घुस गई थी कि, यदि ऐसा किया जायगा तो प्रजातंत्र तथा अराजकता के जो भाव उभर रहे हैं, वे भी सदा के लिए समाप्त हो जायँगे।

सौभाग्य से इस नरेश को एक इतना चतुर तथा तेज़ साथी मिल गया जिसने उसकी सारी कमज़ोरी दूर कर दी। जहाँ पूर्णता आई कि फिर वह शक्ति अकाट्य हो जाती है। वे धुरन्धर राजनीति-पण्डित सरदार (कौंट) काबूर थे।

कौंट काबूर पीडमौंट के एक सरदार कुल में उत्पन्न हुए थे। खाने-पीने से बड़े ख़ुशहाल थे। विश्व-विजयी नैपोलियन के परिवार से उनकी रिश्तेदारी भी थी। पीडमौंट में ही स्कूली शिक्षा समाप्त कर, सैनिक विद्यालय में बहुत दिनों तक शिक्षा पाने के बाद उनको सेना में एक ऊँचा पद मिल गया। पर, १८३० की फ्रांसीसी राज्य क्रान्ति पर खुल्लमखुल्ला अपनी सहानुभूति ज़ाहिर करने के कारण उनको नज़र क़ैद होना पड़ा। १८३१ में वे छोड़ दिये गये। वे अपने सैनिक-पद से इस्तीफ़ा देकर संसार-यात्रा के लिए निकल गये और भिन्न-भिन्न देशों की राजनीतिक स्थिति का ख़ूब अध्ययन किया। इटली की दुर्दशा से काबूर की छाती फटी जाती थी और वे उसको भी संसार में एक उन्नत राष्ट्र बनाना चाहते थे।

किन्तु, काबूर तथा मेज़िनी में बड़ा अन्तर था। मेज़िनी स्वाधीनता के लिए एकदम क्रान्ति करना चाहते थे तथा राजा शब्द का नामोनिशान भी मिटा देना चाहते थे; पर, काबूर बड़े चतुर राजनीतिज्ञ थे। वे क्रान्ति को तथा अराजकता को अनावश्यक समझते थे और अपनी राजनीति द्वारा राजाओं को मिलाकर ही अपना कार्य सिद्ध करना चाहते थे। इसी कारण मेज़िनी की जीवनी में तथा गैरीबाल्डी की जीवनी में, दोनों में हम देखेंगे कि काबूर की इन्होंने जी-जान से सहायता की।

भारत में पेशवा-साम्राज्य को बृटिश राजनीतिज्ञों के पेट में

हड़प लिए जाने से नाना फड़नवीस ने बचाया था। यह व्यक्ति उन्नीसवीं सदी के सब से बड़े राजनीतिज्ञों में से एक कहा जाता है। वास्तव में यह सत्य भी है—और अँग्रेज़ लेखक काबूर तथा नाना फड़नवीस को बराबर का राजनीतिज्ञ मानते हैं। दोनों ही महत्वाकाँक्षी थे। काबूर तो चाहते थे कि इटली के लोग मेज़िनी तथा गैरीबाल्डी को भूल ही जायँ; केवल मुझी को याद रक्खें। किन्तु, नाना फड़नवीस के दुर्भाग्य से पेशवा राजघराने में फूट का ऐसा ज़बर्दस्त दौरदौरा था कि उनका बना बनाया काम बिगड़ जाता था। परन्तु, काबूर को विक्टर इम्यानुयेल सरीखा मज़बूत बादशाह मिल गया था।

अस्तु, १८४७ में काबूर अपना एक समाचारपत्र निकाल कर अपने विचार इटली की जनता पर प्रकट कर रहे थे। यह मेज़िनी का खण्डन तथा अपना बड़प्पन ज़ाहिर करने का एक उपाय भी था। विक्टर इम्यानुयेल के गद्दी पर बैठने पर आपने उनसे भेंट की और उन दोनों में ऐसी गहरी मित्रता हो गई कि १८५० में ही उन्होंने पीडमौंट के मन्त्रिमण्डल में प्रवेश किया और १८५२ में वहाँ के प्रधान मन्त्री हो गये।

इम्यानुयेल उदार-शासन करना चाहते थे। इधर काबूर सरीखा, जर्मनी के बिस्मार्क के समान महा धुरन्धुर राजनीतिज्ञ इनको मिल गया। फिर क्या था। पीडमौंट का शासन बड़ा उज्ज्वल होगया। वहाँ पार्लामेण्ट का भवन बन गया। पार्ला-

मेण्ट या जनता द्वारा चुनी राष्ट्रीय महासभा खुल गई। बहुत सी स्कूली पाठशालायें खोल दी गईं। व्यापार तथा कला की भी उन्नति होने लगी—कहने का तात्पर्य यह है कि दो ही वर्ष में पीडमौंट ने इतनी तरक्क़ी कर ली कि, वह इटली के सभी राज्यों में सबसे सुशासित तथा अच्छे प्रबन्ध वाला राज्य हो गया।

क्रिमिया की लड़ाई

इटली में लोक-प्रियता प्राप्त कर लेने के अलावा, काबूर की तेज़ अक़्ल ने पीडमौंट को यूरोप में भी बड़े राज्यों में शामिल कराने का अवसर पा लिया। इसी समय, १८५४ में, काले सागर पर अपना प्रभाव डालने के लिए क्रिमिया में जो महायुद्ध छिड़ा था, उसकी कहानी महामना ग्लेडस्टन की जीवनी में हम पाठकों को बतला चुके हैं। इस लड़ाई में रूस के ख़िलाफ़ फ्रांस और इङ्गलैण्ड था। आस्ट्रिया और जर्मनी तटस्थ थे। काबूर ने झट इटली को इङ्गलैण्ड की ओर कर दिया—इस लड़ाई में रूस को हार खानी पड़ी थी। पीडमौंट भी यूरोप में नाम कमा बैठा। पेरिस में, यूरोपीय राष्ट्रों की जो सभा बैठी, उसमें पीडमौंट भी बुलाया गया और यद्यपि अभी तक आस्ट्रिया का मातहत माने जाने के कारण इसको स्वतंत्र निमंत्रण नहीं देना चाहिए था, यह भी सभा में बुलाया गया और कौंट काबूर इसके प्रतिनिधि होकर गये।

इस सभा में कावूर का जो व्याख्यान हुआ था, वह संसार प्रसिद्ध व्याख्यानों में से एक है। कावूर ने, सभा में, आस्ट्रिया के प्रधान मंत्री के सामने ही, इटली पर आस्ट्रिया के अत्याचारों का सच्चा चित्र खींचकर रख दिया और साफ़ कह दिया कि, इटली की बहबूदी की मुख़ालिफ़त केवल आस्ट्रिया करता है।

जो हो, घटना क्रम समझाने के लिए हम यहाँ तक लिखते चले आये तथा गैरीबाल्डी की जीवनी से इन घटनाओं का सम्बन्ध न होने पर भी, इनको समझाना ज़रूरी था, अन्यथा सारी बातें हमारी समझ में न आतीं।

कावूर ने धीरे-धीरे विक्टर इम्यानुयेल को आस्ट्रिया से लड़ने के लिए तैयार कर लिया, २५ अप्रैल १८५९ को आस्ट्रिया से युद्ध करने वाली सेना तैयार हो गई।

आस्ट्रिया से युद्ध

आस्ट्रिया से युद्ध की घोषणा कर दी गई। फ्रांस ने—उसके चालबाज़ सम्राट् लूई नेपोलियन पुनः इटली की राष्ट्रीयता का पक्ष लेकर पीडमौंट के शाह के साथ लड़ने को तैयार हो गये। परन्तु, मेज़िनी को नेपोलियन पर इतना अविश्वास होगया था कि, उन्होंने कावूर से अपने मतभेद की बात साफ़ कह दी। यद्यपि वे इटली आगये, पर उनकी आत्मा प्रसन्न न थी। गैरीबाल्डी को भी बड़े आदर के साथ बुलाया गया और उनको स्वयं

सेवक भर्त्ती करने की आज्ञा दी गई। गैरीबाल्डी सीमा पार करके बेला नामक पहाड़ी में चले गये।

गैरीबाल्डी से सेनापति लोग जलते थे। इनके नाम में इतना जादू था कि, इटली में इनका आगमन सुनते ही झुण्ड के झुण्ड नवयुवक इनके पास पहुँचने लगे। गैरीबाल्डी के इम्यानुयेल की तरफ़ होते ही सम्पूर्ण क्रान्तिकारक समाज इनकी ओर हो गया। इटली में पुनः आँधी बह उठी। नवयुवक बादशाह ख़ुद सेना का निरीक्षण करते तथा काम देखते थे।

सेनापति लोग, गैरीबाल्डी से इतनी डाह करते थे कि इनको कहीं लड़ने का अवसर ही नहीं देते थे। अन्त में परेशान होकर गैरीबाल्डी ख़ुद बादशाह से मिले और बादशाह ने इन्हें स्वतन्त्र युद्ध करने की आज्ञा दे दी।

गैरीबाल्डी बड़ा वीर आदमी था। ६-७ वर्ष के आराम के जीवन ने इनको आरामतलब नहीं बना दिया था, बल्कि, लड़ने के लिए इनके दिल में व्याकुलता उत्पन्न कर दी थी। जब इनको लड़ने का एक अवसर मिला, तब ये बड़े प्रसन्न हुए। इनके सम्पूर्ण अङ्ग में स्फूर्त्ति आ गई, सारा शरीर उत्तेजित हो गया।

इनको यदि कोई दुःख था तो केवल इस बात का था कि, शाह पीडमौंट लुई नेपोलियन से सहायता ले रहे थे और गैरीबाल्डी उस चालबाज़ से नफ़रत करते थे।

फ्रांस के सम्राट् लूई नेपोलियन चालबाज़ भले ही रहे हों, पर उनके समय में फ्रांस का साम्राज्य ख़ूब पनप उठा था। किन्तु, फरांसीसी राज्य क्रान्ति से उत्तेजित हुई जनता शान्ति के साथ ही संग्राम और युद्धक्षेत्र का यश भी चाहती थी। इसी लिए लूई नेपोलियन युद्ध करके और स्वाधीनता के नाम पर कहीं बड़ी विजय प्राप्त करके नाम कमाना चाहते थे। इसी कारण इन्होंने पीडमौंट के शाह की सहायता स्वीकार की थी।

गनीमी कावा

गैरीबाल्डी के पास सेना बहुत छोटी होती थी; पर, ये बड़ी बड़ी सेना का मुक़ाबला करते थे। यह लड़ने की कला भी ख़ास होती थी। मेज़िनी भी गुरेला ढङ्ग से लड़ने की शिक्षा देते थे। बच-बच कर, सेना पर धोखे से छापा मार कर लड़ने का ढङ्ग शिवाजी महाराज का था। छोटी सेनाओं के लिए यही एक उपयुक्त साधन है। गैरीबाल्डी के सामने भी यही साधन था और इस बच-बच कर लड़ने की कला में—जिसे "गनीमी कावा" कहते हैं, ये इतने दक्ष थे कि, यूरोप में एक स्कूल इस कला को सिखलाने के लिए इन्हीं के नाम पर था।

स्वतन्त्रता के साथ लड़ने की आज्ञा पाकर गैरीबाल्डी ने किस उत्तमता के साथ युद्ध किया इसके लिखने की अब ज़रूरत नहीं है। केवल इतना ही जान लेना पर्याप्त होगा कि इस अवसर

पर ये बड़ी वीरतापूर्वक शत्रु के छक्के छुड़ा रहे थे तथा बादशाह इम्यानुयेल तक इनकी ख्याति पहुँच रही थी।

८ मई को कैसेले में आस्ट्रियनों को हराकर, २३ मई को तिसिनो में उन्हें फिर हराया। इसके उपरान्त कई स्थानों पर विजय प्राप्त करते हुए इन्होंने टिरोल तक आस्ट्रियनों को हरा डाला और आल्पस की सीमा से उनको बिलकुल खदेड़ कर आस्ट्रिया ख़ास में घुसने ही वाले थे कि विला फ्राँका की सन्धि के कारण इनको निराश होकर हाथ खींचना पड़ा।

आस्ट्रिया की हार

विला फ्राँका की सन्धि का कारण सोलफ़ेरीनो के मैदान में फ्रांस तथा पीडमौंट की सम्मिलित सेना से आस्ट्रिया की गहरी हार थी। यह लड़ाई संसार की सबसे बड़ी लड़ाइयों में से एक गिनी जाती है। आस्ट्रिया के १,७०,००० सिपाही थे तथा पीडमौंट और फ्रांस की ओर १,५०,००० के लगभग थे। सबसे बड़ी बात यह थी कि, इस लड़ाई में तीन सम्राट् लड़ रहे थे—आस्ट्रिया के युवक सम्राट् जोसेफ़—फ्रांस के लुई नेपोलियन तथा पीडमौंट के विक्टर इम्यानुयेल। इस लड़ाई में आस्ट्रिया की गहरी हार हुई। लगभग ४०,००० सिपाही काम आये। आस्ट्रियन सेना पीछे भागी और यदि उसका पीछा ज़ोरों से किया जाता तो इटली सदा के लिए

आज़ाद हो जाता पर—इसी समय मेज़िनी की बात सच निकली—

फ्रांस की दग़ाबाज़ी

लुई नेपोलियन का काम पूरा हो गया। एक भारी विजय प्राप्त करके उसने फ़रांसीसी प्रजा की भावुकता के घड़े का भर दिया। अब उसे विक्टर इम्यानुयेल की 'इटली की स्वाधीनता' से क्या करना था—उसने अपने मन से युद्ध बन्द करा दिया और विला फ्रांका की अस्थायी सन्धि होगई।

सन्धि की शर्तें भी लुई नेपोलियन ने अपने आप तै कर लीं। लाचार होकर विक्टर इम्यानुयेल को उन्हें स्वीकार करना पड़ा। इसके अनुसार लौम्बार्डी पीडमौंट को मिलने वाला था। आस्ट्रिया उसे बिलकुल ख़ाली कर देने वाला था। पार्मा तथा रोमाग्ना आदि के नरेश, जो क्रान्ति से डर कर भाग गये थे, वे पुनः अपनी गद्दी पाने वाले थे। इटली का 'सेवाय' तथा 'नाइस' नामक दोनों नगर फ्रांस को मिलने वाले थे। अभागे आस्ट्रिया ने दुम दबाकर सब कुछ स्वीकार कर लिया।

किन्तु, फ्रांस को छोड़कर इस सन्धि से और कोई प्रसन्न न हुआ। मेज़िनी की बात जाने दीजिए। गैरीबाल्डी को सब से अधिक क्रोध शस्त्र रख देने, हवस मिटाने का अवसर न देने के

कारण था। दूसरी महा-पीड़ा यह जानकर हुई कि इनकी मातृभूमि नाइस इनके दुश्मन फ्रांस के हाथ में जा रही थी। इम्यानुयेल स्वयं इस कारण नाराज़ थे कि उनकी पितृभूमि 'सेवाय' फ्रांस ले रहा था। कावूर ने विक्टर इम्यानुयेल के इस सन्धि पर हस्ताक्षर कर देने से रुष्ट होकर इस्तीफ़ा दे दिया तथा ६ मास घर पर बैठे रहे—गैरीबाल्डी ने भी इस्तीफ़ा दे दिया। किन्तु इनका त्यागपत्र स्वीकार न किया गया।

दूसरा विवाह

आगे बढ़ने के पहले एक बात यह निवेदन कर देना उचित है कि, गैरीबाल्डी की विजय-वार्त्ता की लम्बी कहानी देना, इटालियन राज्यक्रान्ति का पिछला इतिहास लिख डालना है। इस कारण हम, जहाँ तक हो सकेगा, संक्षेप में, इस वीर की वीर-कहानी को लिखेंगे। इटालियन राज्य-क्रान्ति की कहानी लिखने के लिए समय तथा स्थान चाहिए।

आस्ट्रिया पर आक्रमण करने के समय गैरीबाल्डी का परिचय उच्चकुल की एक धनाढ्य कुमारी रेमान्दी से हुआ था। वह बड़ी रूपवती महिला थी। परिचय के साथ ही आपस में प्रेम हो गया। युद्ध समाप्त होने पर गैरीबाल्डी निराश होकर लौट पड़े और कोमो नामक स्थान में इन्होंने अपना दूसरा विवाह किया। विवाह के बाद ही, इन्होंने फ़ौरन रोमाग्ना रिया-

सत के क्रान्तिकारियों की सहायता करनी चाही अतएव ये मध्य इटली के लिए रवाना हो गये।

मेज़िनी की चेष्टा से रोमाग्ना में क्रान्ति की पूरी तैयारी हो चुकी थी। गैरीबाल्डी ने पीडमौंट के राज्य में से ही एक स्वयं-सेवक सेना इकट्ठी करनी शुरू की; पर, राज्य से आज्ञा मिली कि आक्रमण न किया जाय। इस आज्ञा से गैरीबाल्डी को बड़ा क्रोध आया और ये अपने द्वीप को लौट गये। किन्तु, एक बार पुनः कार्यक्षेत्र में उतर पड़ने पर अब तलवार म्यान में रखना असम्भव था। इन्होंने नेपुल्स राज्य की पराधीनता से सिसली टापू को मुक्त करने का निश्चय कर लिया।

गैरीबाल्डी ने सिसली टापू को विक्टर इम्यानुयेल के राज्य में ही जोड़ना चाहा था। इम्यानुयेल के सैलफेरीनो के पराक्रम से ये उनकी वीरता पर मुग्ध हो गये थे। यह साधारण बात न थी। किन्तु, काबूर को गैरीबाल्डी कि हार्दिक इच्छा का पता न था। फिर भी, वे जानते थे कि, यदि सिसली जीत लिया जायगा तो इम्यानुयेल को मिल जायगा। पर, प्रकट रूप से वे यह दिखलाना भी नहीं चाहते थे कि हम इनके समर्थक हैं। अतएव उन्होंने एक जल-सेनापति को यह दिखावटी हुक्म देकर भेजा कि जहाँ कहीं गैरीबाल्डी मिलें पकड़ लिए जायँ; पर, भीतरी आज्ञा यह दी कि, समय पर उनको सहायता दी जाय।

गैरीबाल्डी के दो साथी, क्रिस्पी तथा बरटानी ने हमले की पूरी तैयारी कर ली। इसी समय, इङ्गलैण्ड की सहानुभूति भी इनको मिल गई। जब गैरीबाल्डी को इस सहानुभूति का पता चला तब इन्होंने अपनी तैयारी पूरी कर ली।

सिसली-विजय

सन् १८६० को ये जेनोआ से, १९७० स्वयंसेवकों का एक गरोह लेकर चल पड़े और ११ मई को मारसाला में जा पहुँचे। यहाँ पर बृटिश जहाजों ने इनकी रक्षा तक की थी। १२ मई को सलेमी में गैरीबाल्डी का शासन घोषित हो गया और १५ मई को कलाता फ़िमी नामक स्थान पर नेपुल्स की सेना को इन्होंने गहरी पराजय दी। २५ मई को पालेरमो ले लिया गया तथा एक प्रकार से चारों ओर नेपुल्स की सेना की हार होने लगी। ६ जून को इनकी इतिहासप्रसिद्ध लड़ाई हुई। २०,००० की भारी नेपुल्स सेना दो क़िलों की आड़ में लड़ती हुई भी अन्त में गैरीबाल्डी की छोटी टुकड़ी से पराजित हो गई और उसने आत्म-समर्पण कर दिया।

गैरीबाल्डी की सिसली-विजय की ख़बर इटली में सनसनी फैलाने के अलावा अन्य स्थानों पर भी स्वाधीनता की आग भड़काने वाली थी। चारों ओर से योद्धा तथा देशसेवी स्वयंसेवक इनके झण्डे के नीचे आने लगे। नेपुल्स के राजा फ्रांसेस्को

द्वितीय बेचारे बड़ी परेशानी में पड़े—किन्तु, काबूर तो दूसरों के परिश्रम पर पीडमौंट को हस्तगत करना चाहते थे । आपने पीडमौंट के हस्तगत करने की कोशिश शुरू कर दी और इसी सिद्धि के लिए लाफ़ारिना और देप्रेतिश नामक दो चतुर दूत भी गैरीबालडी के पास भेज दिये।

गैरीबालडी उस समय सिसली के गवर्नर थे। एक द्वीप के 'बादशाह' होने पर भी इनका जीवन एक साधारण सिपाही की तरह सादा था। ये जब कभी ईश्वर की प्रार्थना करने के लिए गिर्जाघर में जाते, तब स्थान विशेष पर बैठ कर कभी प्रार्थना न करते; बलिक, बड़ी सादगी से, भीड़ में बैठ कर प्रार्थना करते। इन सब सादगियों के कारण, साथ ही द्वीप के सुशासन के कारण प्रजा इनको पिता के समान प्यार करने लगी । वीरपूजक तथा व्यक्तिपूजक होना मनुष्य का साधारण स्वभाव है—इसी स्वभाव के कारण गैरीबालडी की पूजा में ही सब लीन हो गये—प्रजातंत्र के शासन स्थापन का ध्यान भी न रहा।

गैरीबालडी को चुपचाप बैठना पसन्द न था। जब एक बार पीडमौंट के शाह की आज्ञा के बिना काम शुरू कर दिया तब फिर रुकने की क्या ज़रूरत थी? अतएव इन्होंने नेपुल्स पर आक्रमण करना ही निश्चित किया। क्रिस्पी तथा बरतानी दोनों इस बात की तैयारी में लगे । पर उधर काबूर के दूत इनकी ख़ुशामद में लगे थे। उन्होंने नेपुल्स पर

हमला करने से मना करने की लाख चेष्टा की तथा पीडमौंट के सुपुर्द सिसली कर देने की प्रार्थना की—परन्तु, गैरीबाल्डी ने पहला काम यह किया कि, काबूर के दूतों को निकाल बाहर किया।

२० जूलाई को मिलाज़्ज़ो में नेपुल्स की सेना को इन्होंने गहरी शिकस्त दी। मेसीना भी इनके कब्ज़े में आ गया। यहीं से ये चुप के से सार्डीनिया के 'अरान' की नामक स्थान को चले गये। यहाँ बरतानी रोम पर चढ़ाई करने की तैयारी कर रहे थे—इस समय गैरीबाल्डी ने निश्चय कर लिया था कि, जान लड़ा कर नेपुल्स तथा पोप दोनों के राज्य को जीत लिया जाय।

नेपुल्स की विजय

मेज़िनी के विषय में पाठक एक बात यह पायेंगे कि, ज्यों ज्यों उनका अन्त निकट आता गया, त्यों-त्यों जनता पर से उनका प्रभाव घटता गया; पर, गैरीबाल्डी का ज़माना शुरू से ही चढ़ाव पर था। मेज़िनी के लिए एक ऐसा समय भी आया जब कि इटली को उनकी आवश्यकता न रही; पर, गैरीबाल्डी की ज़रूरत इटली को सदैव रही।

इस छोटी सी पुस्तक में, हम शाह इम्यानुयेल तथा काबूर का हाल न दे सकेंगे। केवल गैरीबाल्डी की जीवन घटनाएँ ही

बतलायँगे। गैरीबाल्डी के विजय की उज्ज्वल वार्त्ता भी पूरी नहीं लिखी जा सकती।

गैरीबाल्डी ने रोम पर आक्रमण करने के पहले नेपुलस को जीतना ही उचित समझा तथा शक्तियों को केन्द्रीभूत करके नेपुलस को ही गिराना उचित समझा। इन्होंने बरतानी की जल सेना को पालेरमो जाने की आज्ञा दी और आप स्वयं मेसीना पहुँचे। मेसीना में गैरीबाल्डी को शाह इम्यानुयेल का एक पत्र मिला जिसमें इन्हें नेपुलस पर आक्रमण करने के लिए मना किया गया था। किन्तु, इस पत्र के उत्तर में, गैरीबाल्डी ने बड़ा नम्रतापूर्ण एक पत्र भेजा जिसमें उनकी 'आज्ञा की अवज्ञा करने की इजाज़त' माँगी थी।

व्यर्थ समय न गँवाकर गैरीबाल्डी फ़ौरन समुद्र की राह चल निकले और जल डमरू मध्य पार कर, रेग्गिओ नामक स्थान पर, २१ अगस्त १८६० में, नेपुलस की सेना को गहरी शिकस्त दी। इस शिकस्त के बाद ही, सानजिओवन्नी नामक स्थान में, ६,००० नेपुलस की सेना ने इनको आत्म-समर्पण कर दिया तथा सोवेरिया नामक स्थान में ११,००० सिपाहियों ने इनके सामने हथियार डाल दिये।

फिर क्या था, सम्पूर्ण नेपुलस राज्य में खलबली मच गई। गैरीबाल्डी के नाम ने एक बार नेपुलस को पहले भी थरथरा दिया था। इनके नाम ने इस बार पुनः गज़ब ढा दिया।

७ सितम्बर को, इटली की—नेपुल्स की स्वाधीनता का झण्डा लिए गैरीबाल्डी ने नेपुल्स नगर में प्रवेश किया। बादशाह फ्रांसेस्को राज्य छोड़ कर गेइता नगर को भाग गये। १अक्टूबर को गैरीबाल्डी ने नेपुल्स की ४०,००० की दूसरी बड़ी सेना को हरा डाला।

इस प्रकार पाठक देखेंगे कि किस प्रकार गैरीबाल्डी ने, अपने बूते पर, केवल १०७० सैनिकों की एक छोटी सी टुकड़ी लेकर, नेपुल्स ऐसे बड़े राज्य को हरा दिया। काबूर ने जब देखा कि, नेपुल्स भी गैरीबाल्डी का होगया तब उन्होंने पुनः उसे विक्टर इम्यानुयेल के राज्य में मिलाने की कोशिश करनी चाही। इम्यानुयेल की कई सेनाएँ नेपुल्स की तरफ़ चल निकलीं। इस सेना के साथ इम्यानुयेल स्वयं गये—और सेना भेजने का उद्देश्य यह प्रकाशित किया गया :—

"यदि सेना न भेजी जायगी तो इन स्थानों में बड़ा उपद्रव तथा दङ्गा-फ़साद हो जायगा"—गैरीबाल्डी ने यह राज्य इटली की एकता के लिए वास्तव में इम्यानुयेल के लिए ही जीता था। ये रोम को भी जीतना चाहते थे। पर इन सेनाओं के कारण यह असम्भव समझ कर रुक गये और युद्ध बन्द करने की घोषणा कर दी—शाह इम्यानुयेल से इनकी भेंट हुई और उन्हींके साथ ७ नवम्बर को इन्होंने नेपुल्स नगर में पुनः प्रवेश किया। नेपुल्स तथा सिसली पर पीडमोंट का राज्य हो गया।

किन्तु, गैरीबाल्डी ने एक भी सम्मानित पद न लिया। देशभक्त सम्मान के लिए नहीं लड़ते। दूसरे ही दिन यह वीर कैपेरेरा द्वीप चला गया। यहीं इन्होंने अपनी स्वयंसेवक सेना भङ्ग कर दी।

इसी समय गैरीबाल्डी का प्यारा नगर नाइस फ्रांस को मिल गया। इससे इनको बड़ी ग्लानि हुई। इधर कावूर के ही कारण गैरीबाल्डी का रोम-आक्रमण रुक गया था। अतएव मेज़िनी के समान ये भी कावूर से रुष्ट हो गए। इनको अपना रोष प्रकट करने का अवसर उस समय मिला जिस समय ये इटालियन पार्लामेण्ट के सदस्य चुन लिये गये।

गिरफ़्तारी

किन्तु, गैरीबाल्डी कैपरेरा में अधिक समय तक विश्राम न कर सके। इनकी हार्दिक इच्छा रोम पर आक्रमण करने की थी। नेपुल्स को राज्य में मिला लेने से इटली की आधी एकता हो चुकी थी। अब रोम तथा पोप को क्यों अछूता छोड़ा जाय। इनके साथी भी रोम पर आक्रमण करने के लिए उतावले हो रहे थे। अन्त में, गैरीबाल्डी को सार्वजनिक इच्छा के सामने मस्तक झुकाना पड़ा।

२६ जून सन् १८६२ में सिसली टापू के पालेरमो नामक स्थान पर गैरीबाल्डी ने अपनी सेना एकत्रित करनी शुरू की।

इस समय रात्ताओ नामक गैरीबाल्डी विरोधी आदमी पीडमौंट का प्रधान मंत्री था। उसने गैरीबाल्डो के जानी दुश्मन सियालदिनी नामक एक नीच आदमी को इस हमले को रोकने के लिए सिसली भेजा। सिसली पर इम्यानुयेल की सेना का 'आक्रमण' घोषित' होगया।

गैरीबाल्डी के पास सेना बहुत थोड़ी थी। साथ ही, इनका स्वास्थ्य भी ठीक न था; फिर भी, गैरीबाल्डी, इटालियन सेना से घूम कर सेटानिया नामक स्थान में पहुँच गये। दो स्थानों पर सियालदिनी की सेना की को गहरी शिकस्त भी दी—पर अन्तिम जोवन में उन्नति के ऊँचे शिखर पर चढ़ते समय, २७ अगस्त को एक स्थान पर इनको सेना हार गई और दुश्मन द्वारा ये गिरफ़्तार कर लिये गये। बन्दी करके ये जेल में ठूँस दिये गये—यह उस बादशाह का इनाम था जिसको इन्होंने इतना बड़ा राज्य जोत कर दिया था! कुछ समय बाद सब राजनीतिक क़ैदी छोड़ दिये गये और गैरीबाल्डी भी छूट कर कैपरेरा चले आये। इनके बन्दी किये जाने से समस्त इटली रुष्ट था। पराजय से इनका सम्मान और भी बढ़ गया था तथा जनता की सहानुभूति भी पहले की अपेक्षा अब अधिक हो गई थी।

प्रबल पराक्रमी

समाचार-पत्र पढ़नेवाले पाठकों को ज्ञात होगा कि, जब किसो संसार-प्रसिद्ध व्यक्ति का सम्मान करना होता है, तब उसको

"उस नगर को स्वाधीनता" का सम्मान दिया जाता है। इस प्रकार के सम्मान-प्रदर्शन का विस्तृत हाल हम ग्लैडस्टन की जीवनी में बतला चुके हैं। गैरीबाल्डी का यूरोप में कितना आदर था, इसका प्रमाण इसी से मिलता है कि सन् १८६४ की बसन्त ऋतु में जब ये इङ्गलैण्ड गये, तब इनका बड़े आदर के साथ स्वागत किया गया और लन्दन नगर की स्वाधीनता' का दुर्लभ प्राप्त सम्मान प्रदान किया गया।

लन्दन लौटने के बाद ही आस्ट्रिया के विरुद्ध तथा इटली की एकता स्थापन के लिए विक्टर इम्यानुयेल ने दूसरा युद्ध घोषित कर दिया। गैरीबाल्डी भला कब चुप बैठनेवाले थे। आपने फ़ौरन युद्ध में भाग लेना स्वीकार किया—और इस अवसर पर तीसरी जूलाई से २१ जुलाई तक इन्होंने आस्ट्रियन सेना को स्थानों पर गहरी शिकस्त दी—उसका समाचार इटली आश्चर्य से सुन रहा था।

गैरीबाल्डी ट्रेन्ट पर आक्रमण करनेवाले ही थे कि, इनकी विजय से द्वेष और ईर्ष्या से जले-भुने—इनके काम को मट्टी में मिलाने की नियत से प्रधान सेनापति ने युद्ध बन्द करने की आज्ञा दी। पाठको ! इस समय गैरीबाल्डी को कितना दुख हुआ होगा ? इनकी आत्मा कैसी कराह उठी होगी ? पर, सैनिक संयम के अनुसार अफ़सर की आज्ञा शिरोधार्य्य करनी उचित

थी और इस आज्ञा को शिरोधार्य्य करते हुए "मैं आज्ञा मानता हूँ" का जो पत्र इन्होंने लिखा वह संसार में एक पढ़ने लायक़ चीज़ है। निराश तथा हताश होकर गैरीबाल्डी पुनः कैपरेरा लौट गये। मेज़िनी भी निराश होकर लन्दन चले गये थे। गैरीबाल्डी का आत्म-त्याग स्वर्णाक्षरों में लिखे जाने योग्य है।

जय-पराजय का खेल

जिस प्रकार हमारी बड़ी बूढ़ियों को नाती देखने की लालसा लगी रहती है, उसी प्रकार गैरीबाल्डी को रोम जीतने की वासना थी। कैपरेरा में इनकी तबीयत नहीं मानी और १८६७ में आप फिर रोम-विजय के लिए चल निकले। किन्तु, बीच में ही इटालियन सरकार द्वारा क़ैद कर लिए गये और कैपरेरा भेज दिये गये—किन्तु, गैरीबाल्डी इस प्रकार निराश होनेवाले नहीं थे। आप पुनः २३ अक्टूबर को रास्सो नामक स्थान में, रोमन सीमा में पहुँच गये और फ़ौरन ही स्वयंसेवकों की एक टुकड़ी तैयार कर ली।

पोप के राज्य के कई स्थान गैरीबाल्डी ने जीत लिए। पर, इनकी सेना बड़ी कमज़ोर थी और अन्त में फ्रांस तथा पोप की सम्मिलित सेना के सम्मुख हार गई। गैरीबाल्डी को भागना पड़ा। किन्तु, इटालियन सीमा पार करते समय फ़िगलिया नामक स्थान में ये पहचान लिये गये और क़ैद कर लिये गये।

जिस प्रकार घर से भागा हुआ अवारा लड़का पकड़ कर फिर घर पहुँचाया जाता है, उसी प्रकार ये कैपरेरा पहुँचाये गये। किन्तु, इनका नाम और यश उस समय इटली में इस क़दर बढ़ा हुआ था कि, इन्हें गिरफ़ार कर इनका बाल भी बाँका करने का साहस किसी सरकार का नहीं था।

ये जिस समय कैपरेरा में पहुँचाये गये, उस समय इनके पास से एक फूटी कौड़ी भी न निकली। इनके पास जो कुछ धन था, वह सब रोम को जीतने की धुन में ये ख़र्च कर चुके थे। केवल खेती से तो सब काम चलता न था। इनके साथियों की संख्या बढ़ती ही जाती थी और उनके भरण-पोषण का भी प्रबन्ध करना ज़रूरी था अतएव गैरीबाल्डी ने अपने जीवन की घटनाओं को लिखना शुरू किया। वे ग्रन्थ संसार के आदरणीय तथा पठनीय ग्रन्थों में से हैं। उनको पढ़ने वाला यह कह देगा कि यह पुरुष तलवार चलाने में जितना सिद्धहस्त था, उतना ही क़लम के चलाने में भी।

फ्रांस में

इस वीर की जीवनी में हम इटालियन राज्यक्रान्ति का अधिक हाल नहीं दे सकते। केवल इतना ही जान लेना पर्याप्त होगा कि शाह इम्यानुयेल ने तथा काबूर ने आस्ट्रिया को खदेड़ने का जो तरीका निकाला था, उसमें इनको बड़ी

सफलता मिली। रोम का पतन होगया तथा १८७० की सन्धि से मेज़िनी का आधा स्वप्न सत्य होगया। आस्ट्रिया इटली को क़रीब क़रीब ख़ाली कर गया। लूई नेपोलियन के पतन के साथ फ्रांस भी हाथ खींच बैठा तथा शाह इम्यानुयेल की नीति यकायक सफल हो गई। यद्यपि पूरी आज़ादी न मिली, फिर भी, आधा कार्य हो गया।

इसी समय जर्मनी फ्रांस पर चढ़ दौड़ा। जो दशा १६१७ में फ्रांस ने जर्मनी की की थी, वही दशा जर्मनी उस समय फ्रांस को कर रहा था और इसी कारण १६१७ का युद्ध फ्रांस का बदला कहा जाता था।

जो हो, गैरीबाल्डी फ्रांस से दुश्मनी को भूल गये। इनका तो काम ही पराधीनों की सहायता करना था। आप झट फ्रांस पहुँचे। फ्रांस में गैरीबाल्डी की ज़बर्दस्त तलवार ने चैतिलों, अन्तू तथा दिजूं नामक तीन स्थानों पर जर्मनों के ऐसे छक्के छुड़ाये कि भावुक फ़रांसीसी इनको देवता के समान मान बैठे।

किन्तु, फ्रांस में, फ़रांसीसी जनता से इनकी ज़्यादा न पटी और अन्त में आप पुनः कैपरेरा लौट आए।

१८७४ में आप रोम की ओर से, इटालियन पार्लामेण्ट के सदस्य चुने गये।

पुरस्कार

उस समय देश में गैरीबाल्डी के प्रति इतना आदर तथा

उत्साह फैला था, इनका यश इतना चमक रहा था कि, इटालियन पार्लमेण्ट ने—जिसमें गैरीबाल्डी के कितने ही विरोधी भी थे, सर्वसम्मति से ४०,००० पौंड का—यानी ६०००,०००) रुपये की एक मुश्त रक़म तथा तीस हज़ार रुपये के लगभग की सालाना पेंशन इनको देश सेवाओं के पुरस्कार में दी।

गैरीबाल्डी ने इस महान् पुरस्कार को अस्वीकार कर दिया; पर, मित्रों के आग्रह से, कुछ दिनों बाद उसे स्वीकार कर लिया।

इसके बाद ही रोम को टाइबर नदी की बाढ़ से बचाने के लिए बाँध का ज़बर्दस्त काम शुरू हुआ। उस काम में गैरीबाल्डी ने तन-मन से सहायता दी।

तीसरा विवाह

पाठक गैरीबाल्डी का दूसरा विवाह न भूलेंगे। पर इस स्त्री के साथ गैरीबाल्डी कभी न रह सके। अतएव आपने १८७५ में अपने इस विवाह को रद्द करा दिया। इसके बाद ही आपने अपना तीसरा विवाह किया तथा—कैपरेरा में शान्तिमय जीवन व्यतीत करने लगे।

स्वर्ग-यात्रा

सन् १८८२ के शुरू महीने में ही गैरीबाल्डी बीमार पड़े और २ जून को अपने द्वीप में ही. बड़ी शान्ति के साथ, बाल-

बच्चों के बीच में इस नश्वर शरीर को छोड़कर स्वर्ग सिधारे—

गैरीबाल्डी का जीवन समाप्त होता है। त्याग तथा बलिदान की दृष्टि से इस जीवनी की तथा मेज़िनी की कोई तुलना नहीं की जा सकती। दोनों का अपना त्याग निराला था। गैरीबाल्डी ने इटली को एकता के सूत्र में बाँधा तथा उसकी आज़ादी के प्रधान कारण थे। यदि इन्होंने नेपुल्स तथा सिसली शाह इम्यानुयेल को न दिया होता, निरन्तर युद्ध करके फ्रांस तथा पोप की—आस्ट्रिया तथा अन्य दुश्मनों की सेना को परास्त न किया होता तथा उनको थका कर जर्ज्जर न कर डाला होता तो शायद शाह इम्यानुयेल का काम सरल न होता।

गैरीबाल्डी की रोम पर विजय प्राप्त करने की चेष्टा ने ही रोम का शीघ्र पतन कराया—फ्रांस में जाकर गैरीबाल्डी के प्रबल पराक्रम में इटली की वीरता की जो सुगन्धि भरी थी, उसने छिटक कर, इटली की धाक वहाँ भी जमा दी। दक्षिण अमरिका में गैरीबाल्डी के यश ने इतना काम किया था कि इनके बाद इटालियनों का सदैव के लिए वहाँ धाक जम गई।

गैरीबाल्डी की मृत्यु से सम्पूर्ण यूरोप में शोक छा गया और इटली के शोक का तो कहना ही क्या था!